वृन्दा

वर्ष 21, अंक-9, पत्रिका पंजीकरण संख्या MP HIN 2003/11939

सितंबर : 2023

Red No M. P. HIN 2003/11939

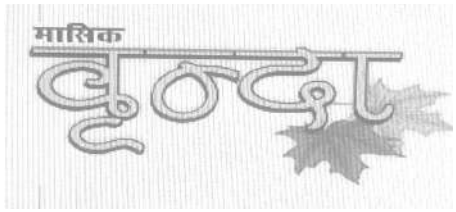

सम्पादन परामर्श
श्री सुधेंदु ओझा-07701960982
सम्पादक
अंजना छलोत्रे
-84 61912125
कार्यकारी सम्पादक
आशा शैली- 7055336168
सम्पादकीय कार्यालय
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
मो-9827034165

मुद्रक/प्रकाशक/स्वत्वाधिकारी सम्पादक -अंजना 'सवि'
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल-462039
वृन्दा के सभी विवादों का वैधानिक क्षेत्र भोपाल रहेगा
लेखन सामग्री के लिए सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

मूल्य-एक प्रति 12/-,
वार्षिक 120/-,
संस्था और पुस्तकालय हेतु 120/- वार्षिक

इस अंक में

सम्पादकीय
आलेख
भारत में क्रांति को नई दिशा देने वाले दो महान क्रांतिकारी योद्धा तिलक और आजुाद - डॉ. उमेश प्रताप वत्स 4

संस्मरण
खिसकते पहाड़ दरकते गाँव -डॉ. राकेश चक्र 7

कविता
खामोशी हमेशा अज़ाब नहीं है -राजेश कुमार सिन्हा 10
नटखट कन्हैया -प्रिया देवांगन 'प्रियू' 10
बाबूजी प्रतिमा पुष्प 11
पिता -पूजल दशरथ विजयवर्गीय 11

कहानी
थरथराती लौ -सुरेश बाबू मिश्रा 13

लेख
नाग-संस्कृति : एक अध्ययन -डॉ. विकास मानव 16
सुश्री राधिका (प्रियंका)- नई पीढ़ी की बेटियों के लिए एक नजीर -हेमन्त चौकियाल 24
(धरावाहिक उपन्यास)
पारस आशा शैली 27

समीक्षा
ज्ञानवर्धक और जीवन की व्यवहारिकता....अंजना छलोत्रे 'सवि' 31

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, तथा स्वत्वाधिकारी सम्पादक अंजना द्वारा वृन्दा के लिए खो प्रिंटर्स तलैया चौक से मुद्रित व जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन, भोपाल 462 039 से प्रकाशित।

सम्पादकीय

प्रिय पाठको,

2 सितम्बर को भारत में नारियल दिवस या राष्ट्रीय नारियल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को 2017 में नारियल विकास बोर्ड (सी. डी.बी.) द्वारा नारियल दिवस के रूप में घोषित किया गया था। यह हमारे जीवन में नारियल के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए मनाया जाता है। नारियल का वृक्ष एक बड़ा, सदाबहार पेड़ है, जो भारतीय उपमहाद्वीप का मूल निवासी है। यह श्रीलंका, फिलीपींस, थाईलैंड और मलेशिया जैसे अन्य देशों में भी उगाया जाता है। पेड़ भोजन, पोषण और स्वास्थ्य का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह आहार फाइबर, विटामिन, खनिज और आवश्यक फैटी एसिड का स्रोत है।

इसका उपयोग कई आयुर्वेदिक दवाओं और कई पारंपरिक भारतीय व्यंजनों में भी किया जाता है। नारियल भारत में सबसे बहु उपयोगी और प्रचुर मात्रा में मिलने वाली फसलों में से एक है। इसका उपयोग खाना पकाने से लेकर सौंदर्य प्रसाधनों तक कई तरह से किया जाता है। यह लाखों छोटे किसानों और व्यापारियों के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत है और भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है।

नारियल के गूदे का उपयोग पारंपरिक मिठाइयाँ जैसे लड्डू, बर्फी और हलवा बनाने में किया जाता है। नारियल धार्मिक अनुष्ठानों में भी महत्वपूर्ण है और इसका उपयोग देवी-देवताओं को प्रसाद बनाने के लिए किया जाता है। राष्ट्रीय नारियल दिवस लोगों के लिए एक साथ आने और भारतीय संस्कृति में नारियल के महत्व का जश्न मनाने का एक शानदार अवसर है। यह इस मूल्यवान फसल के संरक्षण और सुरक्षा की आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण अनुस्मारक है। यह भारत के सभी नारियल उत्पादक किसानों और व्यापारियों की कड़ी मेहनत और समर्पण को पहचानने का भी दिन है।

भारत की आधिकारिक भाषाओं में से एक के रूप में हिन्दी को अपनाने के उपलक्ष्य में हर साल 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है। यह दिन संचार की भाषा के रूप में हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने और इसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जश्न मनाने के लिए मनाया जाता है। हिन्दी एक इंडो-आर्यन भाषा है और दुनिया में चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। यह भारत और बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों की आधिकारिक भाषा है। इसका उपयोग कई अन्य देशों जैसे नेपाल, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, गुयाना और दक्षिण अफ्रीका में भी किया जाता है। हिन्दी दिवस मनाने की शुरुआत 1949 में भारत की संविधान सभा द्वारा की गई थी। इस दिन हिन्दी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम और गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इसमें भाषा का जश्न मनाने के लिए लेखन प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद-विवाद और अन्य गतिविधियाँ शामिल हैं। सरकार भी इस दिन हिन्दी के प्रयोग को प्रोत्साहित करती है। हिन्दी दिवस एक महत्वपूर्ण दिन है क्योंकि यह देश की भाषा विविधता और संस्कृति का आईना है।

अंजना छलोत्रे 'सवि'

उनकी कब्र पे एक दिया भी नही
जिनके लहूँ से जले थे कभी चिराग ऐ वतन

आज दमकते हे मकबरे उनके
जो बेच के खा गये शहीदों के कफन..!

ऐ हिन्दुस्तान, इस तस्वीर को तू दिखाता क्युँ नहीं
हमारी बलिदानी के इतिहास को तू बताता क्युँ नहीं

देशभक्ती की सजा दिये जाने के बाद पंजाब से काला पानी
जाते हुए सन् 1938 के एक दिन बाम्बे रेल्वे स्टेशन पर खींची तस्वीर

भारत में क्रांति को नई दिशा देने वाले दो महान क्रांतिकारी योद्धा तिलक और आजाद

- डॉ. उमेश प्रताप वत्स

भारत को हम एक प्राचीन समृद्ध देश मानते है। वेदों के अनुकूल चलने वाला एक श्रेष्ठ राष्ट्र जिसे अनेक महापुरुषों द्वारा देवभूमि, पुण्यभूमि व विश्व गुरु कहकर भी अलंकृत किया गया। भारत की यही समृद्धि विदेशी आक्रांताओं को अपनी ओर आकर्षित करने लगी।

भारत पर प्रथम विदेशी हमला 550 ईसा पूर्व ईरान के हखमनी वंश के राजाओं ने किया था। 516 ई.पू. में कम्बोज, पश्चिमी गांधार, सिंधु क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी। दारा प्रथम के तीन अभिलेखों बेहिस्तून, पर्सिपोलिस तथा नक्शे रुस्तम से यह सिद्ध होता है कि उसी ने सर्वप्रथम सिंधु नदी के तटवर्ती भारतीय भागों पर अधिकार किया था, जो कि पारसी साम्राज्य का 20वां प्रांत बना। ईरानी आक्रमण के बाद मेसीडोनिया निवासी सिकन्दर का भी 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण हुआ।

उल्लेखनीय है कि संपूर्ण भारत पर कोई विदेशी पूर्णतः शासन नहीं कर पाया। हिन्दूकुश से लेकर अरुणाचल तक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक युधिष्ठिर और उसके पूर्ववर्ती राजाओं के अलावा राजा विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य और मिहिरकुल ने ही संपूर्ण भारत पर शासन किया था।

शक, हूण, कुषाण, अरब, इरानी, तुर्की, गुलाम, खिलजी, तुगलक, लोदी, मुगल, अफगान आदि के अनेकों बार किये गये आक्रमणों से भारत का वैभव सिमटता जा रहा था। रही सही कसर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने लुटेरी कंपनी के रूप में आकर पूरी कर दी जिसने न केवल भारत को आर्थिक रूप से कमजोर किया अपितु मानसिक व सांस्कृतिक रूप से भी अपाहिज करने का प्रयास किया।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में नानासाहिब, तात्याटोपे, लक्ष्मीबाई, मंगल पांडे व कुँवर साहिब आदि ने क्रांति की लौ जलाई जो कि प्रज्जवलित होकर धधक भी रही थी। किंतु क्रांतिकारियों की अंग्रेजी हुकूमत पर एक साथ आक्रमण करने की योजना विफल होने पर यह प्रयास पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाये।

पूर्ण स्वराज की माँग पर एक बार फिर पूरे देश में बड़े स्तर पर किए क्रांति का ज्वार उठा। एक ओर गर्म दल के ध्वजवाहक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने वैधानिक तरीके से अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा तो दूसरी ओर क्रांति नायक शहीद शिरोमणि पंडित चन्द्रशेखर आजाद ने क्रांति की मशाल को ओर अधिक प्रज्ज्वलित कर ब्रिटिश राज की रीढ़ तोड़ने का कार्य किया।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश रत्नागिरि के चिक्कन गाँव में 23 जुलाई 1856 को हुआ था। इनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने ही सबसे पहले ब्रिटिश राज के दौरान पूर्ण स्वराज की मांग उठाई थी। इसलिए उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जनक कहा जाता है। 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' ये नारा देने वाले भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायक बाल गंगाधर तिलक हैं। बाल गंगाधर तिलक सिर्फ एक लोकप्रिय

नेता ही नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास, संस्कृत, हिंदू धर्म, गणित और खगोल विज्ञान जैसे विषयों के विद्वान भी थे। वैसे तो उनका पूरा जीवन ही आदर्श है। भारत के स्वर्णिम इतिहास का प्रतीक है, लेकिन बाल गंगाधर तिलक के लोकमान्य बनने का सफर और कदम बहुत रोचक रहा। सन् 1879 में उन्होंने बी.ए. तथा कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। घरवाले यह आशा कर रहे थे कि तिलक वकालत कर धन कमाएंगे और वंश के गौरव को बढ़ाएंगे, परंतु तिलक ने प्रारंभ से ही जनता की सेवा का व्रत धारण कर लिया था। तिलक के क्रांतिकारी कदमों से अंग्रेज बौखला गए और उन पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाकर छः साल के लिए 'देश निकाला' का दंड दिया और बर्मा की मांडले जेल भेज दिया गया। इस अवधि में तिलक ने गीता का अध्ययन किया और गीता रहस्य नामक भाष्य भी लिखा। तिलक के जेल से छूटने के बाद जब उनका गीता रहस्य प्रकाशित हुआ तो उसका प्रचार-प्रसार आंधी-तूफान की तरह बढ़ा और जनमानस उससे अत्यधिक आंदोलित हुआ। तिलक का स्वराज भी राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। वह सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता के प्रति भी सचेत थे।

उनके द्वारा सार्वजनिक उत्सव- गणेश उत्सव और शिवाजी जयंती की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से सभी भोज का सांस्कृतिक मिलन करना था।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ रहे हैं तो तिलक की विरासत को आगे बढ़ाने की बात करनी चाहिए। स्वदेशी विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना को पुनर्जीवित करना और संस्कृति के माध्यम से सामाजिक एकता का प्रयास करना, तिलक की रणनीति की प्रमुख विशेषता थी।

इसी तरह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक एवं लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद का जन्म भी 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ। आजाद का जन्मस्थान भाबरा अब 'आजादनगर' के रूप में जाना जाता है। उनके पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी एवं माता का नाम जगदानी देवी था। उनके पिता ईमानदार, स्वाभिमानी, साहसी और वचन के पक्के थे। यही गुण चंद्रशेखर को अपने पिता से विरासत में मिले थे। क्रांतिकारियों के नायक और अंग्रेजी हुकूमत को बार-बार चकमा देकर थकाने वाले पंडित चन्द्रशेखर आजाद पूर्ण स्वराज के लिए एक नई योजना पर आगे बढ़ रहे थे। भारत माँ की बेड़ियाँ चंद्रशेखर तिवारी को उद्वेलित करती थी और वे गाँधी के असहयोग आंदोलन में पूरी आक्रामकता के साथ कूद पड़े किंतु 1922 में महात्मा गाँधी द्वारा मनमाने ढंग से असहयोग आंदोलन स्थगित करने से वे निराश हो गये। आजादी के लिए संघर्ष का संकल्प उन्हें रामप्रसाद बिस्मिल की हिंदुस्तान रिपब्लिकन एशोसियेशन में ले आया, वे उसके प्रमुख सदस्य बने। पृथ्वी पर चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा का अवतरण एक चमत्कारिक सत्य है, जिस कारण उन्नाव जिले का नाम विश्वभर में प्रसिद्ध हो गया।

असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी था, युवा शेखर सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में शेखर ने एक मोटा पत्थर मारकर उसे लहुलुहान कर दिया, पेशी होने के बाद जज के पूछने पर शेखर ने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतंत्र, काम आजादी के लिए संघर्ष व निवास जेलखाना बताया। गुस्साए अंग्रेज जज ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई। बेंत खाते हुए लहुलुहान शेखर ने हर सांस में वंदेमातरम का जयघोष करते हुए युवाओं में देशप्रेम की शक्ति का संचार कर दिया। फिर अंग्रेजी हुकुमत जीवन भर आजाद के पावन शरीर को कभी छू तक नहीं पाई। चंद्र शेखर और जज के बीच सवाल-जवाब के चर्चे बड़े-बड़े क्रांतिकारी

नेताओं की जिज्ञासा को बढ़ा गये। सभी इस युवा क्रांतिवीर से मिलना चाहते थे। हिन्दुस्थान में क्रांति की जितनी योजनाएं बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे।

17 दिसंबर, 1928 को चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को घेर लिया और ज्यों ही जे. पी. साण्डर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकले तो राजगुरु ने पहली गोली दाग दी, जो साण्डर्स के माथे पर लग गई वह मोटरसाइकिल से नीचे गिर पड़ा। फिर भगत सिंह ने आगे बढ़कर 4-6 गोलियाँ दाग कर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब साण्डर्स के अंगरक्षक ने उनका पीछा किया, तो चंद्रशेखर आजाद ने अपनी गोली से उसे भी समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं लाहौर में जगह-जगह परचे चिपका दिए गए, जिन पर लिखा था- लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है। उनके इस कदम को समस्त भारत के क्रांतिकारियों ने खूब सराहा। 27 फरवरी 1931 की एक ऐतिहासिक सुबह प्रयागराज के आनंद भवन में जवाहर लाल नेहरू से मुलाकात के बाद चंद्रशेखर आजाद सीधे अल्फ्रेड पार्क चले गए। आजाद का संगठन एचएसआरए बिखर रहा था। भगत जेल में थे और उन्हें फांसी से बचाने की हर कोशिश नाकाम हो रही थी। वो आजाद जिन्हें 'बहुरूपिया' कहा जाता था। जिनकी सिर्फ तस्वीर हासिल करने में अंग्रेजों के पसीने छूट जाते थे, अपने ही साथी की गद्दारी को नहीं भांप सके। उनके पुराने साथी रहे वीरभद्र तिवारी ने उन्हें देख लिया और पुलिस अफसर शंभूनाथ तक खबर पहुँचा दी। पार्क में घिरने के बाद आजाद डटे रहे, लेकिन उन्हें 5 गोलियाँ लगीं और वे बुरी तरह घायल हो गए। अपनी प्यारी कोल्ट पिस्टल में बची आखिरी गोली से उन्होंने खुद को शहीद कर लिया, लेकिन अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे। चंद्रशेखर आजाद ने संकल्प किया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने 27 फरवरी, 1931 को इसी पार्क में स्वयं को गोली मारकर मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी। आजाद अक्सर गुनगुनाते थे- 'दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद हैं, आजाद ही मरेंगे।' यही सच भी हुआ।

अंग्रेज उनकी शहादत से इतना घबरा गए थे कि जिस जामुन के पेड़ के पीछे छिपकर उन्होंने 32 मिनट तक गोलियों का सामना किया, उसे भी कटवा दिया था। दरअसल आजाद की शहादत के बाद लोग इस पेड़ की पूजा करने लगे थे और यहाँ की मिट्टी का तिलक करने लगे थे। ऐसे वीर क्रांतिकारी चंद्रशेखर का नाम मन में आते ही अपनी मूंछों को ताव देता वह नौजवान आँखों के सामने जाता है जिसे पूरी दुनिया 'आजाद' के नाम से जानती है।

आज हमारे बच्चों एवं देश के हर विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यह ज्ञात होना चाहिए कि वे जिस खुली हवा में साँस ले रहे हैं, उसके लिए किन लोगों ने अपना सर्वस्व बलिदान दिया हैं और उन बलिदानियों के उन महापुरुषों के क्या सपने थे और वे आने वाली पीढ़ी से क्या अपेक्षा रखते थे ताकि हम उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करें।

14 शिवदयाल पुरी, निकट आइटीआइ
यमुनानगर, हरियाणा - 135001
9416966424
umeshpvats@gmail-com

खिसकते पहाड़ दरकते गाँव

डॉ. राकेश चक्र

अपने गाँव की आबोहवा को मैंने 34 वर्ष पूर्व अलविदा कह दिया था। शहर की प्रदूषित आबोहवा में ऊपरी मन से लम्बे अर्से से पूरी तरह घुल-मिल गया था, लेकिन अन्त:करण अब भी बाग-फाग-साग-राग की चाह में अनन्त आकाश में उड़ानें भरता रहता। मैं अपने मन को समझाता कि वो पगडंडियाँ अब बहुत दूर पीछे छूट गई हैं, जिन पर चलकर मैं सर्व सुख का अहसास करता था।

एक दिन मैं यूँ ही स्वभाव के अनुसार शहर की भीड़ में गुम था कि मुझे एक मानुष्य अपनी तरह का ही मिल गया जो पहाड़ से अभी कुछ ही दिन पूर्व शहर में पलायन कर पहुँचा था। वह गाँव की असल तसवीर मन मस्तिष्क से खींच कर मेरे सामने प्रस्तुत कर रहा था। बाद में उससे मेरा अन्त:करण पिघल कर गीत रूपी दर्द में दर्पण की तरह मुखर हो गया------उसने तसवीर कुछ इस तरह बयां की।

''गाँव में बीस- बाइस घर हैं, जिनमें आधे से अधिक घरों में बाहर से ताला लटका है और घरों के आँगन और द्वारों के सामने बड़े-बड़े झाड़-झंखाड़ खड़े पहरा दे रहे हैं और कह रहे हैं कि हम कब तक प्रतीक्षा करें मालिक के आने की? ऐसी भी क्या बेरुखी थी कि हमें सिर्फ इसलिए अकेला रहने के लिए छोड़ गए कि केवल और केवल अर्थ का ही अर्थ था। घर का कोना-कोना, दीवारें आदि सब कुछ अबोला ही बहुत कुछ बोल रही हैं। पशु धन भी अब न के बराबर रह गए थे, जो कभी सभी के लिए पहरुए हुआ करते थे। कितना जीवंत था अपना गाँव, छह सात वर्ष पहले। सब कुछ बदल दिया रोजगार और सुविधाओं को पाने की चाह ने इन वर्षों में--

गीत का मंथन कुछ इस तरह हुआ

गाँव
शहरों की तरफ अब
चल दिए घर छोड़कर
भीड़ में गुम हो गए हैं
कब दिखे हैं मोड़ पर

बतकही चौपाल वह
याद में
फिर-फिर उतरती
बादलों की बेरुखी है
बूंद भी कैसे बरसती
जिंदगी भी
आदमी से
जा रही मुख मोड़कर
अर्थ के
जंगल में मानव
खो गया है भीड़ में
अब बया भी उड़ गईं हैं
दीखती कब नीड़ में
कंकरीटी वन उगे अब
झुग्गियों को तोड़कर
कौन अब सुनता है लोरी
बचपना अब फूल सा
हाथ में मोबाइलों का
है खिलौना शूल -सा
गाँव जैसे सो रहे हैं
अब शहर को ओढ़कर
खो गए हल बैल बिछुड़े
अब नहीं गउएं सुहातीं
अब मशीनों का हुआ है दबदबा
श्रम की न थाती

सभ्यता का जिन्न निकला
शील घट को फोड़कर।"

पहाड़ और मैदान के ग्रामों की दशा और दिशा उसी तरह बदल गई है , जिस तरह हमने हवा , पानी और मिट्टी को भी सुविधाभोगिता के अंध विकास में बदल दिया है। ये अंध विकास ऐसे घोर तिमिर की ओर बढ़ रहा है, जो एक दिन महाप्रलय का आमंत्रण बनेगा।

गाँव और शहरों में मोबाइल और टीवी क्रांति ने सरलता, सहजता, प्रेम, सहष्णुता और भाईचारे पर जोरदार प्रहार किया है, जो अन्तः तक ऐसा समा गया है कि हमने घरों के सामने बनी दीवारों और मुख्य दरवाजों को भी शहरों की तरह चौहद्दी कर कछुए की तरह सिमट लिया है। साथ ही बदले की भावना, इच्छा और अपेक्षायों को बढ़ाकर तनाव का आवरण ओढ़कर सहजता, शान्ति और सरलता पर भी खग्रास-सा लगा दिया है। सीधे शब्दों में कहूँ तो हमने अपने सुकून को भी स्वयं अपने हाथों छीन लिया है।

देश आजाद हुआ। आजादी मिलने के उपरांत गरीबी, पीने का पानी, बेरोजगारी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ, आवागमन आदि मूलभूत जन सुविधाओं में कुछ सुधार तो अवश्य हुआ, विगत कुछ वर्षों में, लेकिन पहाड़ी, सीमावर्ती और मैदानी दूरदराज के गाँव आज भी मूल सुविधाओं से वंचित नजर आते हैं। मुझे इसका मुख्य कारण यही लगता है कि सत्ता के सेवकों का नाकारापन और घोर उपेक्षा। जनसेवकों और आती-जाती सरकारों ने वंचितों के लिए कभी गंभीरता, निष्ठा और ईमानदारी से विचार ही नहीं किया। केवल और केवल सत्ता में बने रहने के लिए ही साम-दाम-दण्ड-भेद के हथकंडे अपनाकर इतिश्री करते रहे। शेष बची हुई योजनाओं का धन धरातल पर तो कम अर्थात 15 या 20 परसेंट ही बमुश्किल लगा, बाकी सरकारी मशीनरी, स्थानीय जनसेवक और ठेकेदार मिलकर बंदर बांट कर हजम करते गए। क्योंकि उनका भूखा पेट ईमानदारी के पैसे से कभी भरता ही नहीं है। यानी गरीबों और जनता के धन पर खुले आम डाका और बाल न बांका और बने रहे सारे के सारे देश के आका।

जिस गाँव में मूलभूत सुविधाओं का अभाव हो और त्रस्त आदमी भूख और बेरोजगारी से जूझ रहा हो,क एक बच्चे हों ,साथ ही अन्यान्य समस्याएं मुँह बाए खड़ी हों , जैसे खेती के लिए ल्सचा के पर्याप्त साधन न हों, खेती को जंगली पशु उजाड़ देते हों, जंगली पशुओं से जान का खतरा हो, पालतू पशुओं के लिए पर्याप्त चारा न हो आदि आदि , तो आदमी पेट भरने की तलाश में शहर की ओर दौड़ लगाने को मजबूर हो ही जाएगा। चाहे उसकी चाह में उसे गन्दगी और बदबू से अटे नाले-नालियों के आसपास ही क्यों न रहना पड़े , वह जिंदा रहने के लिए विवश और संघर्षरत है अर्थात नरक भोगने के लिए वह अपने आपको मानसिक रूप से तैयार कर लेता है। ऐसे जगहों पर मनुष्य तो मनुष्य, पशु भी नहीं रहना चाहेगा।

एक दिन मेरे मित्र ने पहाड़ के गांव और शहरों के कुछ ही वर्षों के बदलाव का हालचाल कुछ इस तरह बताया-- जंगल, गदेरे (स्वच्छ पानी के नाले) और जंगली पशु कम हो रहे हैं। जो बचे हैं, जंगलों में जंगली पशुओं को खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है, इसलिए वे आबादी झेत्र का रुख कर रहे हैं--- बन्दर, लँगूर , भालू , हाथी आदि शाकाहारी पशु फसल को तो चौपट कर ही रहे हैं , साथ ही जान -माल को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं और साथ ही शेर आदि भी पालतू पशुओं और मानव को आहार बनाकर आतंकित कर रहे हैं। ठेकेदार और वनाधिकारियों की गठजोड़ जंगलों का दोहन कर

परम् कर्तव्य निभा रही है। दूर दराज के गाँवों में कहीं-कहीं स्कूल हैं, तो वहाँ शिक्षक नहीं है, हर कोई शहर के आसपास ही येन-केन-प्रकारेण सुविधाभोगिता में सुख से रहना चाहता है, इसलिये गाँव की शिक्षा पूरी तरह राम भरोसे से ही चल रही है और रही सही कसर महिला शिक्षकों ने इसलिए पूरी कर दी है कि वे सब गाँव में रहना ही नहीं चाहतीं और ऊपर से मातृत्व अवकाश जैसे कई तरह के अवकाश जो छह माह से लेकर सालभर तक के हैं। यदि किसी विद्यालय में एक ही महिला शिक्षक है, तो विद्यालय चपरासी के भरोसे।

सरकार के घोषित अवकाशों के अलावा भी जुगाड़ू अवकाश, जो आपस में मिल-मिलाकर लेते रहते हैं, स्वास्थ्य सेवाएं भी भगवान भरोसे खेती के लिए पानी के साधन भी पर्याप्त नहीं। आवागमन के साधन भी बहुत कठिन हैं। पुरुषों द्वारा अत्यधिक शराब का सेवन और परिश्रम का न करना आदि अनेकानेक कारण उन्होंने गिनाए कि मैं सोचने को मजबूर हो गया कि भविष्य भयावह है ।

अब पहाड़ का आदमी अपने गाँवों को छोड़कर शहर की तरफ बहुत तेजी से भाग रहा है, जिसके कारण शहरीकरण तो बढ़ ही रहा है, साथ ही अनेकानेक समस्याएँ मुफ्त में आती जा रही हैं।

इसी तरह मैदान में बसे गाँव आज भी अनेकानेक मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, पीने और सिंचाई के लिए पानी, आवासीय, रोजगार, मार्ग, विद्युत आदि की पर्याप्त व्यवस्था न होना। साथ ही राजनीति के चक्रव्यूह में फँसकर अपनी शान्ति, आपसी प्रेम-भाईचारे को मटियामेट करना तथा मद्यपान, नशे फँसकर और मूँछ की लड़ाई में अपने आज और कल को अपने ही हाथों बर्बाद करना उनका शगल बन गया है।

कुछ लोग रोजगार की तलाश और मूलभूत सुविधाओं को पाने और राजनीति के दलदल से बचने के लिए भी गाँव से शहरों की ओर पलायन कर अनेकानेक समस्याओं को जन्म दे रहे हैं। एक ही परिवार के कई-कई आवास होने का तात्पर्य है, उनको बनाने में ईंट, सीमेंट, लोहा आदि अनेकानेक सामानों की जरूरत, साथ ही जमीन की घेराबंदी, अर्थात जिस जमीन में सब्जी और अन्न उगना चाहिए था, उसमें कंक्रीट के जंगल ही जंगल। इसके साथ ही वाहनों आदि की भी अलग से जरूरत। साथ ही मानवीय अनेकानेक आवश्यकताओं के लिए अस्पताल और स्कूल आदि। अर्थशास्त्री कहते हैं कि जितनी चीजों की माँग बढ़ती उतनी ही मंहगाई बढ़ती है ।

इन्हीं सब कारणों के चलते मंहगाई अपनी चरम सीमा पर पहुँच रही है, तो दूसरी ओर गरीब आदमी का जीना और मुश्किल होता जा रहा है। इसमें और चार चाँद लगा रही है, बेलगाम आबादी, जिस पर अंकुश लगाने में सरकारें मौन हैं, कहीं उनके हाथ से सत्ता न खिसक जाए।

मेरा यह मानना है कि यदि गाँवों को स्वर्ग बनाना है और लगातार बढ़ रहे शहरीकरण पर अंकुश लगाना है, तो गाँवों में पर्याप्त रोजगार के साधन, उचित चिकित्सा और शिक्षा, आवागमन के साधन, बढ़ती आबादी पर अंकुश, सिंचाई के पर्याप्त साधन, पशुपालन और दुग्ध व्यवसाय, मनोरंजन, बिजली आदि की पर्याप्त व्यवस्था हो जाए, तो अधिकांश लोग गाँव की ओर लौटने को मजबूर होंगे, इसके साथ ही शहरीकरण भी अंधाधुंध नहीं बढ़ेगा। महंगा पर अंकुश लगेगा। किसान और मजदूर खुशहाल होगा।

90 बी शिवपुरी
मुरादाबाद -244001
9456201857
तांमेीबींातं00/हउंपस.बवउ

खामोशी हमेशा अज़ाब नहीं है

राजेश कुमार सिन्हा

मैं कागज पे
खामोशी को उतारता हूँ
उसे एक नया आयाम देता हूँ
उसपे लगी तोहमत को
गलत साबित करने की
कोशिश करता हूँ
खामोशी हमेशा अज़ाब नहीं है
और इसकी वजह का
कोई मुकम्मल जबाब नहीं है
ख्याल और ख्वाब इसके हमसफर हैं
इसे सबसे अज़ीज़ तसव्वुर है
बाज़ दफा ये फितरत मे शामिल होती है
कभी कभी ओढ़ ली जाती है
छोटी छोटी रंजिशों पर
अपनी मुश्किलों पर
दूसरों की तरक्कियों पर
पर जानकार समझ लेते हैं
इसके मिजाज को परख लेते हैं
ज़ाहिर है, कभी इसे तवज्जो भी मिलती है
कभी दुआ सलाम भी नहीं होती
शायद तब जाकर इसे होता है एहसास
क्यों नहीं बन सकी आज मैं खास
चिंतन/मनन की प्रक्रिया चलती है
उथल पुथल मचती है
खुद से रूबरू होने की कोशिश होती है
बेशक, नब्ज़ की पहचान हो जाती है
फिर निकलती है ये अपना सुकूत तोड़ कर
वजूद हल्का सा हो जाता है
ऐसा लगता है देर से ही सही
मैंने इसका चेहरा पढ़ तो लिया है

बान्द्रा(वेस्ट),मुंबई-50
7506345031

नटखट कन्हैया

प्रिया देवांगन 'प्रियू'

ठुमक ठुमक आए कन्हैया,
देखो नटखट है नंदलाल,
छम छम छम घुंघरू बाजे,
पैरों में सुंदर साजे,
गोकुल की गलियों में घूमे,
घुंघराले हैं उसके बाल।।

रोम रोम जब हर्षित होवे,
गूंजे आँगन किलकारी,
मनमोहक ये दृश्य सलोना,
छुप कर देखे गोपियाँ सारी,
नजर उतारे मातु यशोदा,
अचरज करके करे सवाल।।

मधुर मधुर मुरली की धुन,
सुन गैय्या रंभाये।
बाल रूप की छवि निराली
आँखों में छप जाये।
मदमस्त मगन हो मेरे कान्हा
बैठे कदम्ब की डाल।।

करे उपाय लाख कंस,
भय सर में मंडराये,
बकासुर कृष्ण के आगे,
अपना प्राण गंवाये,
जन जन हृदय वास मुरारी,
रखे सभी का ख्याल।।

राजिम
जिला - गरियाबंद
छत्तीसगढ़
Priyadewangan1997@gmail-com

बाबूजी

प्रतिमा पुष्प

(1)
लोगों ने कहा कि
बाबूजी नहीं रहे
मैंने देखा कि
सुनहरे कपड़े में लपेट
एक शरीर ले गए कुछ लोग
बाबूजी तो खद्दर पहनते हैं
वो हैं मुस्कराते हुए
अपनी पोशाक में
अपने अंदाज में
मेरी आदतों के पास

(2)
बाबूजी की छड़ी
कोने में रहती खड़ी
मैंने बिस्तर कोने में लगा लिया है
पापा हूँ बूढ़ा हो गया हूँ
चलने में डगमगाता हूँ
छड़ी से दरवाजा लगाता हूँ
बाबूजी की उंगलियों का
आज भी स्पर्श पाता हूँ
और तन कर चलने लगता हूँ
मैं भी आखिर पापा हूँ

(3)
चुप कहाँ हूँ
कितना तो बोलता हूँ
तुम समझना चाह कर भी
कब समझ पाते हो मेरी बात
कितना बदल गया है वक्त
मैं भी तो वही हूँ
न मैं बदला न मेरी बात
हाँ तुम जरूर बड़े हो गए हो
तुम्हारा स्टेटस और रुतबा भी
अब मैं बाबूजी नहीं
बूढ़ा बाप हूँ

ज्ञानपुर, भदोही, उत्तर प्रदेश

पिता

-पूजल दशरथ विजयवर्गीय

पिता, वटवृक्ष की छाया है,
हर गम, दु:ख, परेशानी को
जिसने दूर भगाया है,
सुख चेन की जड़ों को,
अपनेपन से जिसने फैलाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
तरह तरह की मिट्टी से,
मिश्रण रूपी पोषक तत्वों को,
आभरण में जिसने मिलाया है,
सींचकर संस्कारों से,
जिसने इसे बढ़ाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
सहनशीलता, ईमानदारी, धैर्य का,
जिसने खाद बीज उपजाया है,
अनेक उतार-चढ़ाव खुद सहकर,
जिसने ठहराव इसमें लाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है,
घनी जटाएँ साहस रूपी,
जिसने आडम्बर बिछाया है,
कोमल पत्तियों रूपी निर्मल मन,
जिसने खुली किताब की तरह सजाया है,
पिता, वटवृक्ष की छाया है।

राजसमंद, राजस्थान।

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर साहित्य मण्डल के अध्यक्ष श्री मदन मोहन शर्मा जी, अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय (चण्डीगढ़) के कुलपति अमर सिंह वधान के कर कमलों द्वारा सत्यपाल सिंह 'सजग' (लालकुआँ), राम रतन यादव (खटीमा), देवी प्रसाद पाण्डे प्रयागराज एवं मनोज शर्मा (दिल्ली) को काव्य भूषण मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

थरथराती लौ

-सुरेश बाबू मिश्रा

रात के नौ बजे थे। शहर में चारों ओर सन्नाटे का आलम था। कभी-कभी सैनिकों के बूटों की खट-खट की आवाज़ इस सन्नाटे को तोड़ देती थी। गणतंत्र दिवस के दिन अचानक शहर में साम्प्रदायिक हिंसा भड़क उठी थी, जिसको शान्त करने हेतु सारे शहर में कर्फ़्यू लगाना पड़ा। स्थिति नियन्त्रित न होते देख स्थानीय प्रशासन की मदद हेतु सेना बुलाई गयी। आज का यह गणतंत्र दिवस यहाँ सेना और कर्फ्यू की दहशत के बीच ही मनाया गया।

बिजली न होने के कारण चारों ओर घना अंधेरा था। अंधेरा सन्नाटे और दहशत को और भी बढ़ा रहा था। बाहर का यह घना अंधेरा धीरे-धीरे गायत्री देवी के मन पर भी छाता जा रहा था। वह पलंग पर लेटी हुई थीं। उनके चेहरे पर गहन चिन्ता के भाव थे। पास ही के पलंग पर उनका पन्द्रह वर्षीय नाती विमल लेटा हुआ था। विमल लगभग एक सप्ताह से बीमार था। तीन दिन से कर्फ़्यू लगे होने के कारण दवाई नहीं मिल पाई थी जिससे उसकी हालत और बिगड़ गयी थी।

कल से वह लगभग अचेत सा था। बेहोशी में ही वह कभी-कभी बड़बड़ाने लगता। गायत्री देवी की यादें भटकती हुई अतीत में जा पहुँचीं। आज से लगभग पैंतालीस वर्ष पूर्व उनकी शादी धीरेन्द्र प्रताप सिंह से हुई थी। उस समय देश में भारत माँ को आज़ाद कराने की लहर तेज़ी से चल रही थी। उनके पति एक प्रखर क्रान्तिकारी थे और स्वतन्त्रता संघर्ष में प्रमुख भूमिका निभा रहे थे।

शादी के बाद प्रथम मिलन की स्मृति गायत्री देवी की आँखों में ताज़ा हो उठी। शादी की पहली रात ही गायत्री देवी के पति ने उनसे कहा था,

"गायत्री! भारत माँ अंग्रेज़ों के अत्याचारों से आक्रान्त है। अंग्रेज निरीह भारतीयों का शोषण कर रहे हैं। देश की आधी जनसंख्या भूखी और नंगी है। चारों ओर अनाचार और अत्याचार का साम्राज्य व्याप्त है। भारत माँ की इस दीन-हीन दशा को देखते हुए हम नवयुवकों ने देश को आज़ाद कराने का व्रत लिया है, जिससे समानता पर आधारित समाज की रचना की जा सके। वचन दो गायत्री, तुम मुझे इस कार्य हेतु हमेशा प्रेरणा दोगी और कभी बाधा नहीं बनोगी।"

गायत्री ने सिर झुकाकर उनके पैर छू लिए थे। यही उनकी मौन स्वीकृति थी। गायत्री देवी ने आजीवन इस व्रत का पालन किया था। जब उनके पति धीरेन्द्र सिंह को अन्य क्रान्तिकारियों के साथ फाँसी हुई थी, तब उनका बेटा रमन केवल एक वर्ष का था। जब वह अन्तिम बार अपने पति से मिलने गयीं, तब धीरेन्द्र सिंह ने कहा था,

"मैंने अपना जीवन अपने वतन के लिए कुर्बान कर दिया है। मैं अपने देशवासियों को सुखी और समृद्ध देखने की साध मन में लिए जा रहा हूँ। वह दिन भी जल्दी ही आएगा। हो सके तो मेरे पुत्र को मेरे जैसा बनाना मेरी आत्मा तुम्हें स्वर्ग से आशीर्वाद देगी।" यही अपने पति से उनकी अन्तिम मुलाकात थी।

गायत्री देवी को खाँसी आ गई। उन्होंने उठकर थोड़ा पानी पिया। बाहर वही गहरा सन्नाटा पसरा हुआ था। वह फिर पलंग पर लेट गईं। अतीत की कड़ियाँ फिर जुड़ने लगीं। उनके मस्तिष्क में उस समय की घटनाएँ ताज़ा हो उठीं जब सन् 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया था और देश की सेनाएँ

शत्रु को मुँहतोड़ जवाब देने के लिए सीमाओं पर खड़ी थीं, उस सेना की अग्रिम पंक्ति में खड़ा था उनका बेटा रमन। फिर एक दिन समाचार आया-

"फ्लाइंग स्क्वेडेंन लीडर रमन दुश्मन के ठिकानों पर बमबारी करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।"

खबर सुनकर गायत्री देवी स्तब्ध रह गई थीं। रमन की पत्नी रागिनी तीन दिन तक अचेत रही थी। रमन को मरणोपरान्त परमवीर चक्र प्रदान किया गया था। परमवीर चक्र लेते समय गायत्री देवी की आँखें सजल हो उठी थीं। परन्तु उन्हें इस बात का गर्व था कि उन्होंने अपने पति को दिये वचन का पालन किया था।

तभी पलंग पर लेटे विमल ने करवट बदली थी। गायत्री देवी ने उठकर उसको सीने तक चादर उढ़ा दी थी। विमल रमन का इकलौता बेटा था। प्रसव के समय ही विमल की माँ रागिनी की दर्दनाक मौत हो गयी थी। गायत्री देवी ने ही उसे पाला-पोसा था। गायत्री देवी ने एक लम्बी त्रासदी को झेला था। वैधव्य, पुत्र वियोग और एकाकीपन सभी ने मिलकर आहत किया था गायत्री देवी के मन को। परन्तु उन्होंने अपने को इतना थका या टूटा हुआ कभी अनुभव नहीं किया, जितना इस समय कर रही थीं।

आज सुबह से विमल की हालत काफी चिन्ताजनक थी। वह बार-बार बेहोश हो जाता था। कर्फ्यू के कारण वे उसे कहीं बाहर दिखाने भी नहीं ले जा पाई थीं। वह दोपहर से दो बार डॉक्टर ए. एच. खान को फोन कर चुकी थीं परन्तु शहर के हालातों को देखते हुए उनके आने की सम्भावना कम ही थी।

गायत्री देवी सोचने लगीं-"क्या उनके पति एवं पुत्र द्वारा किया गया बलिदान सार्थक हो पाया है ? भारत माँ पर फिर संकट के बादल गहरा रहे हैं। सम्प्रदायवाद और क्षेत्रीयता की लहर फिर पूरे देश में तेज़ी से फैल रही है। भारत माँ आहत है, अपने ही पुत्रों द्वारा किए गये अत्याचारों से।

वह सोचती हैं कि क्या शहीदों का सपना सार्थक हो पाया है ? आम आदमी आज भी आक्रान्त और भयातुर है। सर्वव्यापी भ्रष्टाचार, सुरक्षा के बढ़ने की तरह बढ़ती महंगाई, बेकारों की लम्बी लाइन, दमन, शोषण एवं नैतिक मूल्यों की भारी गिरावट, क्या यही है हमारे स्वतंत्र भारत की वह तस्वीर जिसके लिए हजारों नौजवानों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये थे?

तभी सैनिकों के बूटों की खट-खट की आवाज़ ने गायत्री देवी के विचारों की शृंखला को भंग कर दिया था। वह उठकर खिड़की से बाहर झाँकने लगीं। सैनिक सड़क पर फ्लैगमार्च कर रहे थे।

नगर पालिका के घड़ियाल ने बारह बजाए थे। रात आधी खिसक चुकी थी, परन्तु नींद गायत्री देवी की आँखों से कोसों दूर थी।

नागदंश के समान अनेकों प्रश्न गायत्री देवी के मन में घुमड़ने लगे। वह सोच रही थीं कि सेना देश की सीमाओं की सुरक्षा के लिए है। यदि वह देश की आन्तरिक समस्याओं को ही सुलझाती रहेगी तो कैसे हो पाएगी सीमाओं की सुरक्षा। उन्होंने सोचा कि देश में ऐसी कौन-सी हवा चली है, जिसने भाई-भाई को एक दूसरे का दुश्मन बना दिया है।

तभी विमल के कराहने की आवाज़ ने उनकी सोच को बीच में ही तोड़ दिया था। विमल का सारा शरीर स्पंदनहीन सा होता जा रहा था। सामने रखे दीपक की लौ थरथराने लगी थी। गायत्री देवी ने विमल का सिर अपनी गोद में रख लिया और उस पर हाथ फेरने लगीं। एक भयावह विचार उनके मन में आया कि धार्मिक उन्माद की यह बढ़ती लहर कहीं उनके कुल के आखिरी चिराग को बुझा न दे। क्या यही होगा देशवासियों द्वारा उनके पति और पुत्र द्वारा किये गये बलिदानी का प्रतिफल?

विमल के लिए कुछ न कर पाने की व्याकुलता उन्हें खाए जा रही थी। वह सोचने लगीं कि डॉक्टर ए.एच. खान से उनके कितने पुराने पारिवारिक सम्बन्ध हैं। परन्तु दो बार फोन करने के बाद भी वह विमल को देखने नहीं आये। शायद वह भी शहर की फिजा से प्रभावित हो गये हैं। उन्हें लगा कि विदेशी तत्वों की समाज में दरार डालने की साज़िश धीरे-धीरे कामयाब होती जा रही हैं।

तभी दरवाज़े पर खट-खट की आवाज़ सुनकर वह चैंक पड़ी थीं। उन्होंने उठकर नीचे झाँका। दरवाजे पर चार सैनिकों के साथ डॉक्टर ए.एच. खान को देखकर उनके चेहरे पर आशा की न चमक आ गई थी। उन्होंने उठकर दरवाजा खोला।

सैनिक कुछ जरूरी पूछताछ करके चले गए। गायत्री देवी डॉक्टर साहब को लेकर अन्दर आ गईं। डॉक्टर साहब बोले,

“क्षमा करना बहिन! मुझे आने में देर हो गयी। मैं शाम सात बजे ही घर से चल दिया था, परन्तु पुलिस मुख्यालय से कर्फ्यू पास आदि की कार्यवाही पूरी करने में इतनी देर हो गयी। कहाँ है विमल?”

गायत्री देवी बोलीं, “आप बड़े मौके से आ गये भाई साहब। मैं तो विमल की ओर से निराश ही हो चली थी।”

डॉक्टर साहब विमल का परीक्षण करने लगे। गायत्री देवी बोलीं, ‘‘मेरे विमल को बचा लो डॉक्टर साहब! मैं आपका एहसान कभी नहीं भूलूँगी।”

“कैसी बातें कर रही हो गायत्री बहिन! यह तो मेरा फर्ज है। मेरे लिए विमल और अपने नाती आदिश में क्या फर्क है?”

डॉक्टर साहब ने बैग में से एक इंजैक्शन निकालकर विमल को लगाया। कुछ ही देर बाद विमल के शरीर में स्पन्दन शुरु हो गया। धीरे-धीरे उसने आँखें खोल दीं।

गायत्री देवी के चेहरे पर सन्तोष की छाया झलकने लगी।

बाहर हवा कुछ धीमी पड़ गयी थी। इसलिए सामने रखे दीपक की लौ तेज़ होती जा रही थी। सुबह का फहराया हुआ तिरंगा झंडा शान से लहरा रहा था।

गायत्री देवी सोचने लगीं कि जब तक समाज में डॉक्टर ए.एच. खान जैसे लोग मौजूद हैं तब तक देश की अखण्डता को कोई मिटा नहीं सकता।

ए-979/3, राजेन्द्र नगर,
बरेली-243122 ्ׅठउ्रप्रव्ऋ
मोबाइल नं. 9411422735

नाग-संस्कृति : एक अध्ययन

-डॉ. विकास मानव

श्रावण शुक्ल पंचमी नाग संस्कृति का त्यौहार है। देश के बहुत बड़े क्षेत्र में श्रावण शुक्ला पंचमी को नागपंचमी का त्यौहार मनाया जाता है, उस दिन द्वार पर पाँच सर्प आकृतियाँ अंकित की जाती हैं, मुख मनुष्य जैसा चित्रित किया जाता है।

लोक में नागपंचमी के त्यौहार पर नाग की मूर्तियों, रेखांकित-चित्रों अथवा जीवित साँपों की पूजा की जाती है। उन पर घी, दूध, दही, मधु और पुष्प चढ़ाये जाते हैं। सपेरों को वस्त्र, अन्न, आटा और नगद दान दिया जाता है। लोकजीवन में नाग पकड़ने वाली जातियों का ऐतिहासिक महत्त्व रहा है, जिन्हें सपेरा अथवा कालबेलिया कहा जाता है। आज भी नट और कालबेलिया-जाति के लोग साँप पकड़ने और नाग-पंचमी पर पुंगी या बीन बजाने का कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। लोक-चित्रों में नाग के साथ सपेरों यानी कावड़ लिये कालबेलियों का भी रेखांकन अथवा चित्रण किया जाता है। साँप की बाँबी या बमीठा भी बनाया जाता है, जिसमें साँप का निवास होता है। लोककथाओं में बांबी में से ही पाताल लोक जाने का मार्ग है।

'सर्पपूजा' लोक-संस्कृति का महत्वपूर्ण सूत्र तो है परंतु नाग पंचमी केवल सर्पपूजा का ही त्यौहार नहीं है, उसमें इतिहास का व्यापक अध्याय छिपा हुआ है। वास्तव में नागपंचमी नागजाति को जीवनदान प्राप्त होने का दिन है।

नागपंचमी के दिन जनमेजय ने नाग-जाति के विरुद्ध युद्ध को रोक दिया था। इसीलिये नागपंचमी नाग जाति के लिये जीवन का त्यौहार है। नाग पंचमी की कहानी में एक नारी साँप की रक्षा करती है। कृतज्ञता स्वरूप नाग उसे अपनी बहिन बना लेता है। नारी उसकी झूठी सौगंध न खाने का वचन देती है और नाग उसको मणियों का हार, धन-संपत्ति, आतिथ्य तथा नागलोक में पितृगृह का स्नेह देता है।

नाग पंचमी के संबंध में भाँति-भाँति की किंवदंतियाँ प्रचलित हैं, कहते हैं कि कछुए के अण्डे पर कुण्डली मारकर बैठे हुए शेष नाग के सिर पर पृथ्वी रखी हुई है। मान्यता है कि शेषनाग, नागपंचमी के दिन अपने सिर की 'गुढरी' बदलता है। 'गुढरी' या ईंडुरी वस्तुतः भारी बोझ के दबाव को सिर पर कम करने के लिए कपड़े के टुकड़े की मोटी रस्सी की शक्ल में गोल-गोल मोड़कर बनाया गया आकृति मूलक उपकरण है। नागपंचमी को बैगा-ओझा, तांत्रिक अपने लोकमंत्रों की साधना या अनुष्ठान करते हैं।

नवलदे गाथा :

गाँवों को सर्प दंश से रक्षित करने के लिए श्रावण के महीने में काँसे की थाली बजाकर नवलदे-गाथा गायी जाती है, जिसे भर्रनी, भन्नी, मैदानी नवलदे आदि नाम दिये गये हैं। नवलदे वासुकि की कन्या है। भ्रांति के कारण पुत्री पर कुदृष्टि के दोष से वासुकि को कुष्ठ हुआ। हस्तिनापुर के अमृतकूप से जल लाने के लिये तक्खे गया तो परीक्षित से परास्त हो गया फिर नवलदे नागिन बन कर गयी तो परीक्षित सँपेरा बन गया। नवलदे तोती बन कर आकाश में उड़ी तो परीक्षित बाज बन गया।

नवलदे हिरनी बनी तो राजा परीक्षित शिकारी बन गया। अंत में नवलदे ने परीक्षित से प्रभावित होकर श्रावण महीने की तीज को मिलने का वचन दिया और विवाह हेतु सहमत हो गयी। नागराज वासुकि ने

इसे अपना अपमान माना और परीक्षित से बदला लेने के लिए बीड़ा डाला, छोटे पुत्र कचमन ने उठाया परन्तु वह धोखे से परीक्षित का नमक खा गया तदुपरान्त तक्खे ने बीड़ा उठाया तब नवलदे ने कामरु देश के धनंतरी को तोते के द्वारा संदेश भेजा परन्तु तक्खे ने धनंतरी के कंधे को डस लिया और फिर परीक्षित के प्राण हरण कर लिये।

इसका बदला लेने के लिए परीक्षित के बेटे जनमेजय ने नागयज्ञ किया, नागयज्ञ में नागों का सामूहिक विनाश किया था, त्राहि-त्राहि मच गयी। तब तक्षक की पत्नी नवलदे के पास पति के प्राणों की भिक्षा मांगने आयी नवलदे ने बेटे को नागयज्ञ रोक देने को कहा। इस गाथा में बहिन प्रत्यक्ष रूप से नाग रक्षा का कारण बनती है। नवलदे-गाथा जनमेजय के नागयज्ञ की गाथा है, जिसे पुराणों में यज्ञगाथा कहा गया है।

निश्चित ही उसका रूप नवलदे-गाथा से भिन्न है, पुराणों की यज्ञ-गाथा में नवलदे नाम का कहीं अता-पता नहीं है, वहाँ परीक्षित की पत्नी इरावती है, जो परीक्षित के मातुल इन्दर की कन्या है। नवलदे गाथा में तक्षक की बहिन का नाम नवलदे है और वही मातृकुल की रक्षा का निमित्त बनती है, जबकि यज्ञ गाथा में तक्षक की बहिन का नाम जरत्कारु है, जो जरत्कारु मुनि को व्याही गयी थी और उसका बेटा आस्तीक था।

यह आस्तीक ही अपने मातृकुल की रक्षा का निमित्त बनता है। यज्ञगाथा रोमहर्षण सूत के पुत्र उग्रश्रवा ने वैशंपायन से सुनी थी। वहाँ गाथा शद्वती के तट पर शौनक आदि ऋषियों को सुनाई गई थी। इसी के साथ यह भी सत्य है कि उग्रश्रवा द्वारा सुनायी गयी यज्ञ-गाथा और नवलदे गाथा के बीच एक व्यापक, गहरा और स्पष्ट संबंध-सूत्र है। जनमेजय के नागयज्ञ की कथावस्तु को लेकर के काव्य लिखे गये हैं तथा मौखिक परंपरा में भिन्न-भिन्न जनपदों में इस गाथा के अनेकानेक रूप बने-संवरे हैं। नवलदे गाथा में राजा पारिथ तथा राजा वासुकि का परिचय होता है, परिचय मित्रता में बदल जाता है और दोनों चौपड़ खेलते हैं।

यद्यपि पुराणगाथा का तक्षक वासुकि का पुत्र नहीं है पर नागों से मित्रता का अभिप्राय पुराण-गाथा और ब्रज में प्रचलित लोकगाथा दोनों में है। वृंदावन में एक घाट है, जिसका मिथक सूत्र कालिय-नाग से जुड़ा है।

कालिय-नाग :

कृष्ण के समय में काद्रवेय नाग-कुल के कालिय ने यमुना के घाटों पर अधिकार जमा लिया था। कालिय-नाग की कथा श्रीमद्भागवत पुराण में वर्णित है। गरुड़ के भय से नागों के स्थान रमणक द्वीप को छोड़कर कालियनाग यमुना-हृद में आ गया था। श्री कृष्ण ने यमुना तट से उसके अधिकार को समाप्त करने के लिए कालियनाग से युद्ध किया तथा नाग-पत्नियों की प्रार्थना पर उसे जीवित छोड़ दिया परन्तु यह कह दिया कि ''अब तुझे यहाँ नहीं रहना चाहिये। तू अपने जाति-भाई, पुत्र और स्त्रियों के साथ शीघ्र ही यहाँ से समुद्र की ओर चला जा। कालियनाग-नाथने के अनेक लोकगीत गाये जाते हैं।

कालियनाग की पत्नी और कृष्ण का संवाद लोक-गीतों में बहुत प्रसिद्ध है, ''कौन दिसा ते आयौ रे बालक कहा तिहारौ नाम है?

लोक-कहानी :

भारत की लोककला और लोककथाओं में नाग संबंधी अभिप्राय (मोटिफ़) बहुत व्यापक हैं। भारतीय लोकधर्म में नागपूजा का प्रचलन अत्यन्त प्राचीन है। नाग-पूजा के द्वारा बहिन अपने भाई की रक्षा करती है। अनेक लोककहानियों में राजा को नागमणि प्राप्त होती है, जो पुत्र के रूप में परिवर्तित हो जाती है। 'दूबरी सातें' की कहानी में बूढ़ा साँप

रानी का सुहाग बहोरता है। लोककथा के 'सर्प मनुष्य' अपार धन-संपत्ति के स्वामी हैं। नागपंचमी' की कहानी में 'सर्प-मनुष्य' नारी को मणियों का हार और सोने की सींक देता है।

एक कहानी में बेटा साँपों के पुरखा की सेवा करके एक ऐसी अंगूठी प्राप्त कर लेता है, जो सोने चांदी के बर्तन ही नहीं, सोने का महल तक बना देती है। जैसी करनी वैसी भरनी' कहानी में साँप को मार कर बबूल के नीचे खजाना प्राप्त होता है। कहानियों में नाग की अलौकिक शक्ति है।

मणियों के हार का साँप बन जाना, मेहमान द्वारा नागलोक में भूला हुआ दुपट्टा करील के पेड़ पर मिलना, नाग की अलौकिक शक्ति के अनेक प्रसंग हैं। नाग द्वारा स्त्री का अपहरण, नाग और स्त्री का प्रेम, नाग-पुत्री का राजा से विवाह, पूर्वज नाग, इच्छा रूप धारी नाग, नाग से संवाद आदि अभिप्राय और प्रसंग लोककथाओं में जगह-जगह मौजूद हैं।

अनेक लोकगाथाओं में नागलोक के वर्णन हैं, नाग से संघर्ष और नाग से मित्रता भी है। नल वासुकि को पगड़ी-पलटा यार बनाता है तथा वह जब वासुकि का स्मरण करता है तो वासुकि के मंदिर के चौरासी घंटे बजने लगते हैं और वह नल की सहायता हेतु नागसेना भेज देता है।

नाग-कथाओं के पात्र ऐसे हैं कि उनमें सर्प और मनुष्य घुले-मिले हैं , उनके पास मणि है, दंश है, विष है, बदले की भावना है, मनुष्य की भाँति वाणी है, धन-दौलत है, अमृत है, राजपाट है, वे जब चाहे तब साँप से मनुष्य बन सकते हैं और जब चाहें तब मनुष्य से साँप बन सकते हैं। वे जब चाहें, धरती के संसार से नागलोक जा सकते हैं और नागलोक से धरती के संसार में आ सकते हैं। नागलोक पाताल में है। समुद्र से रास्ता जाता है। वहाँ अमृतकुंड है, मणियाँ हैं, जिनसे प्रकाश होता है। साँप अपनी धर्म बहन को नागलोक ले जाता है।

स्याओ माता :

नागों को लेकर लोक में अनेक कहानी कही जाती हैं। जैसे अहो-आठें की कहानी है, ''भाभी ने ननद से कहा कि -'चलो मिट्टी खोद कर ले आवें।' ननद ने कहा कि 'आज हम उपासी हैं, आज नहीं।' भौजाई बोली - 'मैं मिट्टी खोद दूँगी, तुम भर लेना।' ननद की समझ में आ गई, दोनों खदान पर पहुँचीं।

भौजाई फावड़ा चलाने लगी, खोदते समय सांपिनी के अंडा-बच्चा फावडा लगने से मर गये। घर में मिट्टी आगई। धीरे-धीरे बात पुरानी हो गई, सब उसे भूल गये। आगे चल कर भौजाई के गर्भ हो, बालक का जन्म भी हो किन्तु बालक कुछ दिन बाद ही मर जाय। छह बालक मरे। एक डोकरी-मैया आई, उसने कहा कि - तूने 'स्याओ देवी माँ' का अपराध किया है।

भौजाई ने अहो मैया की मानता की और 'स्याओ मैया' की 'तुरपुती' में से भाभी के सातों मृत पुत्र निकल कर 'बिटौरा' में खेलने लगते हैं। अब यह स्याओ माता कौन है? नाग देवी! किस प्रकार यह कहानी हमें पुरातत्व के सूत्रों की भांति किसी प्राचीन-युग में ले जाती है। यह संस्कृतिशास्त्रियों के अध्ययन की बात है।

दूबरी सातें, भाईदोज, सिड़रिया, जाहरपीर, ढोला, यार हो तौ ऐसा हो, नारद को घमंड दूर कर्यौ, कौसी कौ पूत तथा दीपावली की कहानियों में हमें ऐसे पात्र मिल जाते हैं, जो सर्प भी है और मनुष्य भी हैं। सर्प-मनुष्य। अनन्त चतुर्दशी अनन्तदेव का त्यौहार है।

रतवारे :

मथुरा के एक परिवार में रतवारे नाम के अनुष्ठान की कहानी सुनी कि एक स्त्री के गर्भ से दो बालक उत्पन्न हुए। एक मानव-बालक दूसरा सर्प-बालक। माँ मानव बालक को खटोले पर सुला देती तो सर्प-बालक

खटोले के नीचे पड़ा रहता। दोनों बालक आँगन में खेलते।

एक दिन माँ तो जमना नहाने गयी। नाग-बालक चूल्हे में बैठा था, अंधी सास ने मिट्टी का तेल डाल कर चूल्हा सुलगाया और नाग-बालक जल गया। माँ ने दुख माना और जला हुआ सर्पबालक दूध में पटक दिया। तब से नागपूजा प्रारंभ हो गयी।

नागजाति का इतिहास :

टोटम जातियों में सर्प- उपासक नागजाति का इतिहास बहुत समृद्ध है। नागसभ्यता बहुत व्यापक है। रांगेय राघव ने मिस्र तक नागों के प्रसार की बात कही है। नाग शक्तिशाली थे। नाग वरुण के सभासद थे। समुद्र-मंथन बहुत महत्वपूर्ण मिथक शास्त्रीय घटना है और समुद्र-मंथन प्रसंग में देवता और असुर नागराज वासुकि को अमृत में से हिस्सा देने का वचन देते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी-दोहन के प्रसंग में नागराज धृतराष्ट्र की भूमिका उल्लेखनीय है।

इतिहास में नागराजाओं को उत्तम स्थापत्यकार, नैयायिक तथा उत्तम रासायनिक बताया गया है। नागराज तक्षक ने तक्षशिला नगरी बसायी थी और नागपुर भी नागों का स्थान था। प्राग्ज्योतिषपुर, तक्षशिला और मथुरा नगर उन्होंने बसाये थे। भोगवती को नागों की राजधानी बतलाया गया है, जो प्रयागराज के पास है। तिरुवनन्तपुरम् (त्रिवेन्द्रम्) का अर्थ है अनन्तनाग का नगर। नागौर नागरकुंडल नागौद, अहिच्छत्र नाग-संस्कृति के केन्द्र थे।

नागवंश :

कश्यप ऋषि की पत्नी कद्रु से नागों का जन्म हुआ है। जिनमें प्रमुख आठ नाग थे- अनंत, शेष, वासुकि, तक्षक, कर्कोटक, पद्म, शंख और कुलिक। कश्यप ऋषि की दूसरी पत्नी विनता के पुत्र गरुड़ और वरुण थे। 'महाभारत' में नागजाति के उनहत्तर वंशों का उल्लेख आया है। कालांतर में भारशिव-नाग के रूप में इतिहास में नाग ही मिलते हैं।

बाकी नागवंश विभिन्न जातियों के साथ वैवाहिक संबंधों की प्रगाढ़ता में समा गये। अग्रसेन महाराज को नागकन्या ब्याही थी। रासायनिक नागार्जुन, नागराज-पुत्रों में से था। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'कद्रू पुत्र नागों के वंश में उत्पन्न अर्बुद नामक ऋषि ऋग्वेद के दसवें मण्डल के चौरानवें सूक्त के रचयिता बताये गए हैं। एक और मंत्रद्रष्टा ऋषि इरावत के पुत्र जरत्कारु थे, जिन्हें सायण ने सर्प जाति का बताया है।

नागों के प्रसिद्ध शत्रु माने जाने वाले जनमेजय के पुरोहित सोमश्रवा थे, जिनके विषय में परिचय देते हुए उनके पिता श्रुतश्रवा ने कहा था- यह मेरा पुत्र नाग-कन्या के गर्भ से संभूत महातपस्वी स्वाध्याय-सम्पन्न और मेरे तपोवीर्य से उत्पन्न हुआ है।

नाग प्राचीन जाति थी, पहले आर्यों से इनका संघर्ष हुआ और बाद में इनका दोनों का सहज दाम्पत्य संबंध स्थापित हो गया। प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन-अनुशीलन से यह पता चलता है कि अनेक आर्य ऋषियों और राजाओं ने नाग कन्याओं से विवाह किया था। कायस्थों में अस्थाना (अहिस्थाना) अपनी परंपराओं में नाग को मामा मानते हैं।

मनसा कश्यप ऋषि की पुत्री है। मनसा देवी के पति का नाम ऋषि जरत्कारु बताया गया है और उनके पुत्र का नाम आस्तीक है। पुराण-कथाओं के अनुसार जरत्कारु नाम की नागकन्या का विवाह 'जरत्कारु' नामक ब्राह्मण से हुआ था।

नागकन्या उलूपी अर्जुन को ब्याही थी। वसुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी बलराम और सुभद्रा की माता थीं। ये यशोदा माता के यहाँ रहती थीं। ऐसी मान्यता है कि भगवान् श्री कृष्ण की परदादी 'मारिषा' व सौतेली माँ रोहिणी 'नाग' जनजाति की थीं। माता रोहिणी ही शेषनाग के अवतार बलराम की माता थी।

बलराम की पत्नी रेवती नागमणि के अंश से उत्पन्न हुई थीं, इसलिए वह भी एक प्रकार से नाग-कन्या मानी गई है। जब हनुमानजी समुद्र पार कर रहे थे, तब देवताओं ने उनकी शक्ति की परख करने की इच्छा से नागमाता 'सुरसा' को भेजा था। जब खांडववन जलाकर अर्जुन वहाँ बसनेवाले दुर्दांत तक्षकवंशी लोगों का विध्वंस कर रहे थे उस समय इंद्र ने तक्षक की सहायता की थी।

नागतीर्थ और नागलोक :

भारत में अनेक-स्थानों पर नागतीर्थ हैं, उन जगहों पर नाग पूजा और उत्सव होते हैं, ऐसा ही एक तीर्थ चमोली गढ़वाल में भी है। निमाड़ अंचल में खरगोन के समीप नागझिरी और नांगलवाड़ी नागों के पवित्र स्थान माने जाते हैं। सौराष्ट्र में हर गाँव के सिरे एक सर्पालिया मन्दिर रहता है। (धर्मयुग 10 अगस्त 1969) लोककथाओं में नागलोक का वर्णन आता है। महाभारत के एक प्रसंग में भीम भी नागलोक गये थे और वहाँ उन्होंने रसायन को ग्रहण करके बल अर्जित किया था।

नाग-तत्व की अन्तर्भुक्ति :

पृथ्वी का भार उठाने वाले शेषनाग पुराणों में देव के रूप में प्रतिष्ठित हैं। पुराणों में विष्णु शेष-नाग पर शयन करते हैं.

जब कृष्ण का जन्म होता है तब सूप में रखे बालक की वर्षा से रक्षा शेषनाग ही करता है। बलराम के परमधाम-गमन की कहानी में बलराम के मुख से सर्प निकलकर जल में चला जाता है बलराम को शेष का अवतार माना जाता है। इसी प्रकार से लक्ष्मण को शेष नाग का अवतार बतलाया जाता है।

नाग देवता शिव के गले में विराजमान है। गूगापीर (जाहरपीर) के साथ नागतत्व हैं। भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा में नाग के सात फण दिखलाये जाते हैं। सिन्दूर को नागचूर्ण बताया गया है। स्पष्ट है कि आर्य-स्त्रियों ने इसे नागजाति से ग्रहण किया था। आज सिंदूर हिन्दू-स्त्री के सुहाग की निशानी है।

तांबूल की लता को नागवल्ली कहा जाता है। 'एकैव वल्लिषु विराजति नागवल्ली।' स्कन्दपुराण में नागवल्ली को अमृत से उत्पन्न बतलाया गया है। अमृत और नागवल्ली दोनों नागसंस्कृति की देन हैं। वासुकिनाग ने अपनी बेटी के दहेज में नागवल्ली दी थी। नागपाश एक महत्वपूर्ण आयुध है।

भारतीय लोकसंस्कृति में नाग तत्त्व की व्यापकता : कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक भारत की लोकसंस्कृति में नाग तत्त्व बहुत व्यापक है। कश्मीर में बालादित्य से गोनन्दवंश की समाप्ति और कर्कोटक नागवंश की स्थापना हुई। दुर्लभवर्द्धन ने इस उपलक्ष्य में शेषनाग की पूजा की।

राजा दुर्लभवर्द्धन (प्रज्ञादित्य) नागवंशी था। उस संदर्भ में कल्हण ने भी लिखा है :

कर्कोटकप्रभवः प्रभुः स मुकुटप्रत्युप्त मुक्ताकण-द्योत श्रेणिफणाङ्कुराङ्कित वृहद्वाहुर्महीमुदहन्। सातिप्रीतिसतोऽ फणोत्रत संफुल्ल क्पल्लवन्यासा- वर्जक हाटलाब्ज पटलस्र धाम शोभोऽ भवत्। (113/2911)

नागवंशी राजा दुर्लभवर्द्धन (प्रज्ञादित्य) का परिणय अनंगलेखा से हुआ। जामाता राज्यपद पर अभिषिक्त हुआ। यहाँ सबसे पहले नाग-जाति ही फली फूली। कश्मीर की जनसंख्या में नागों का बाहुल्य था, इसीलिए कश्मीर में नाग तीर्थ हैं। जलाशयों के साथ नाग शब्द जुड़ा हुआ है, जैसे-अनन्तनाग।

नागबोधि और नागार्जुन जैसे नाम मिलते हैं। बुद्ध के पश्चात् जब भारतवर्ष में बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ तो कश्मीर में सर्वप्रथम नाग ही इसके अनुयायी हुए। चिनाव-नदी के किनारे वासुकिनाग का मन्दिर है, शेषनाग, वसुकनाग, तखतनाग, प्रीतमनाग, शबीरनाग, कर्कोटकनाग, कर्णनाग,

इन्द्रनाग, आदि वहाँ के देवताओं के नाम हैं।

कुछ विद्वान तो पाणिनि को गांधार के नागवंश से जोड़ते हैं। (धर्मयुग 10 अगस्त 1969)

व्रजभूमि के चारों और नागों की बस्तियाँ थीं। लोकजीवन ने अनेक जटिल विधि-विधान, अनुष्ठान तथा विश्वासों और मिथकों को जोड़ कर अपने जिस जातीय इतिहास को अपनी मौखिक परंपरा में जीवित रखा है, उसका महत्त्व नागराजाओं, नागकन्याओं और नागदेवताओं की उन मूर्तियों से तनिक भी कम नहीं, जो मथुरा के राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित रखी हैं।

नाग, यक्ष, दानव और असुर जैसी प्राचीन जातियों से गोपालक जातियों और क्षत्रिय कुलों के साथ जो संघर्ष हुआ तथा एवं सांस्कृतिक अन्तर्भुक्ति हुई, उनकी याद इन लोक गाथाओं में छिपी हुई है। मथुरा में नागटीला है। ब्रजमंडल के विभिन्न स्थलों से नाग मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं, सौख की खुदाई में वासुकिनाग की भव्यप्रतिमा प्राप्त हुई थी। मथुरा में नागफणों से युक्त जो मूर्तियाँ मिली है, इन्हें बलराम की मूर्ति माना जाता है। बलराम के रूप में प्रच्छन्न रूप में किसी समय ब्रज में नाग पूजा का प्रचलन था। कोटवन में शेषशायी मंदिर है। हरियाणा में सफीदों का संबंध सर्प दमन की कहानी से बताया जाता है। खांडव वन में नागजाति का निवास था, जनमेजय ने हरियाणा के सफीदों नामक स्थान पर नागयज्ञ किया था।

राजस्थान में गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं। राजस्थान के देवता वीर कल्लाजी (चार हाथों वाले देवता) शेषनाग का अवतार माने जाते हैं। बाताँ दी फुलवारी (विजयदान देथा) में सर्प और नाग से संबंधित राजस्थान की शताधिक लोककथाएँ संकलित हैं।

कुमाऊँ में नाकुरी, राऊँ में बैनी नाग, फैनी नाग, कालीनाग, धौली नाग, करकोटक, पिंगलनाग, खरहरी नाग और अठगुली नाग, नागद्यौं, पद्मद्यौं आदि स्थानों पर नागसंस्कृति के अवशेष हैं। बाला- भानिज, बलराम-कृष्णा, रितुरैण गोरिथना, अर्जुन वासुदंता तथा रामौलों की गाथाओं में नागों के उल्लेख हैं।

हिमाचल में नाग-कथाएँ प्रचलित रही हैं। जैसे कुल्लू में भोटती देवी और वासुकि नाग से अन्य नाग उत्पन्न हुए। एक कन्या द्वारा अट्ठारह नाग पैदा होने की कथा भी है। किन्नौर में भी नाग उत्पत्ति कथा है। सुंगरा के पाँडा क्षेत्र में एक महिला रहती थी जिसका विवाह यहाँ हुआ। उसे पानी बहुत दूर से लाना पड़ता था जब यह मायके गई तो यह समस्या रो-रो कर सुनाई। इस पर पिता ने उसे एक टोकरी दी और कहा कि इसे बिना खोले बिना देखे गौशाला में रख देना।

महिला ने टोकरी खोल दी, टोकरी में से एक नाग भाग निकला। इस तरह वह रास्ते में टोकरी खोलती रही और नाग भागते रहे। जहाँ-जहाँ नाग छिपे, वहाँ जल की कमी नहीं रही, टोकरी में छः नाग और एक नागिन थी। तीन नाग तो रास्ते में ही निकल गए। महिला ने टोकरी पशुशाला में रख दी और पूजा करने लगी। कुछ समय बाद जहाँ टोकरी रखी थी, वहाँ से जल निकलने लगा। यह बात एक अन्य महिला को पता लग गई और उसने टोकरी खोल दी टोकरी से तीन नाग बाहर निकले। एक अन्य कथा के अनुसार एक लामा ने तिब्बत से एक व्यक्ति के पास टोकरी में बहुत से नाग भेजे।

जब वह 'यू मिग-ग्यालसा' पहुँचा तो उसे टोकरी खोल कर देखने की इच्छा हुई। उसने टोकरी खोल दी। टोकरी के खुलते ही नाग बाहर भाग गए। जहाँ जहाँ वे गये वहाँ झरना या पानी का स्रोत फूटा। इस पानी के स्रोत को 'यू मिग-ग्यालसा' कहा जाता है। उनमें से एक नाग अंधा था, जो वहीं गिर गया। इस जगह जो लो 'अंधा स्रोत' कहा जाता है। उरनी में नाग देवता का एक गीत गाया जाता है।

(सप्तसिन्धु / अप्रैल-जून 2014) चम्बा और काँगड़ा में नाग-मन्दिर हैं।

पंजाब जालंधर में सोढल देवता को शेष नाग का अवतार माना जाता है। चड्ढा कुल की एक महिला जोहड़ में कपड़े धोने आयी थी, उनका बालक सोढ़ी यहाँ डूब गया। उसने माँ को दर्शन दिये और सर्प देवता का रूप ग्रहण कर लिया।

बंगाल में गंगा-दशहरा के दिन मनसा देवी की पूजा होती है, मनसा-मंगल गाथा गायी जाती है। मनसा देवी की पूजा के बाद फिर नागपूजा होती है। लोक-मान्यता है कि पंचमी के दिन घर के आँगन में नागफनी की शाखा पर मनसा देवी की पूजा करने से सर्प विष का भय नहीं रह जाता। ताराशंकर वन्द्योपाध्याय की नागकन्या की कहानी बंगाल में प्रचलित लोककहानी का ही रूप है, जिसमें गंगा के किनारे हिजलविल में मनसा मैया के बसेरा बाँधने का प्रसंग है। (धर्मयुग 25 फरवरी 1979) बंगाल की संथाल जाति गोखुरा नाग को देवता मानती है।

प्राचीन काल में तमिलनाडु में नागों की पूजा प्रचलित थी। वहाँ नागपूजा के देवस्थल अभी भी हैं, नायर नाग के वंशज माने जाते हैं। नायरों द्वारा नागपूजा की जाती है। वे साँप के बिल से सुनहरी मिट्टी लाते हैं। चेन्नई के समीप नागपट्टम है, कहा जाता है कि यह प्राचीनकाल में नाग लोगों की राजधानी थी। नागरकोइल में नाग अम्मणि का मन्दिर है, नागमलै आदि स्थान भी नागों के प्रति आदर के सूचक हैं। नागस्वामी, नागार्जुन, नागप्पन, नायनथिनम्, नागलिंगम्, नागम्मल, नागलक्ष्मी आदि नाम नागसंस्कृति से जुड़े हुए हैं।

तमिलनाडु में पीपल की छाया में नाग-स्थल होते हैं, वहाँ साँपों की बांबियों में दूध, फल-फूल चढ़ाने और कर्पूर-आरती के बाद स्त्रियाँ प्रार्थना-गीत भी गाती हैं।

पुट्टु नागरे, पुट्टु नागरे! भूमि इडम कोंडयरे! मनिप्पिरंबु पोला! वाल अलगु नागरे ! सिरु सुलकु पोला। पदमेडुक्कुम नागरे! कुंड मुतुप पोला कन्नलागु नागरे! पचारिसि पोला पल्ललाकु नागरे। कुलतार के पोनन इरु पुरामुम ओडुक्कि बाड़ विड़ वै नागरे!

अर्थात्

हे नागराज, बांबियों में रहने वाले, तुम्हारी पूंछ बड़ी सुंदर है, धरती के गर्भ के निवासी मानो बेंत की लपलपाती हुई छड़ी जैसे आबदार मोती तुम्हारे पैने दाँत, तुम्हारा उभरा हुआ फण जैसे हवा झलने का पंखा, तुम्हारी छोटी-छोटी आँखें मानो छड़े हुए चावल के दाने, जन्मजात श्रमिक देवेंद्र कुटुंबन कांधे पर कुदाल धरे गया है तालाब पर, या बांध पर खुदाई करने के लिए उसकी रक्षा करना। स्वामी, उसे कोई हानि मत पहुँचाना। अपने इस विशाल फण को नीचा रखना और उस गरीब की राह निर्भय कीजिये हे नागस्वामी।

इतिहासविदों का कहना है कि आंध्र के लोग नाग जाति से संबंधित थे। हैदराबाद के नाग मंदिर अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। मैसूर में दीमक के टीले पूजे जाते हैं, समझा जाता है कि यहाँ सर्प का वास होता है। केरल में पुराने समय में सर्पपूजा की प्रथा थी, पुल्लवर नामक जाति में सर्प-पूजा के गीत प्रचलित थे। नायर-परिवार में सर्प-नाग पूजा होती है। महाराष्ट्र के नागपुर का उल्लेख महाभारत में है। सतारा जिले के बत्तिस शिराला गाँव में नागमन्दिर हैं। (डॉ. पुरुषोत्तम जयकृष्ण : भारत में नाग-सर्प पूजा : धर्मयुग 19 अगस्त 1969)

गोवा में श्री नागेश हैं, गोवा के आदिवासी नाग की पूजा करते थे। वर्तमान में अनेक जाति और जनजातियों के लोग अपने आपको नागों के वंशज कहते हैं, कइयों के गोत्र चिन्ह नाग-आधारित हैं। मध्यप्रदेश के मुआसी जनजाति के लोग (कोरकू) अपने को नाग-पूर्वजों का वंशज मानते हैं।

असम के नाग अभी तक पहाड़ी रूप में बचे हैं, वे भारतीय समाज में अन्तर्भुक्त नहीं हो सके। असम में ओजापाली गाथा मनसा नागमाता की ही गाथा है। उसी का एक प्रकरण चाँद-बेहुला कथा है। ओजापाली गायक मानते हैं कि इस नृत्य-नाट्य के प्रवर्तक बृहन्नला (अर्जुन) हैं। (जनसत्ता 30 जुलाई 1995)

उड़ीसा में कार्तिक की चतुर्थी तिथि को पिंगल नाग की पूजा की जाती है। छत्तीसगढ़ लोक संस्कृति में नागतत्त्व भी विद्यमान है। मध्यप्रदेश के मुआसी (कोरकू:करकोटक की शाखा) तथा नागवंशी अपने को सर्प-पूर्वजों के वंशज मानते हैं। राष्ट्रीय संग्रहालय में नागराजाओं, नागकन्याओं तथा नाग-देवताओं की मूर्तियाँ सुरक्षित है।

चेतना विकास मिशन : 9997741245

हिंदी भारतीय संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक- पोस्टमास्टर जनरल यादव

हिंदी भारतीय परंपरा, जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक है। इसके प्रचार-प्रसार से देश में एकता की भावना और सुदृढ़ होगी। सृजन एवं अभिव्यक्ति की ष्टि से लहदी दुनिया की अग्रणी भाषाओं में से एक है। ऐसे में लहदी में गर्व से कार्य करने और अपनी भाषा को समृद्ध करने में सभी को योगदान देना होगा। उक्त उद्गार वाराणसी परिक्षेत्र के पोस्टमास्टर जनरल श्री कृष्ण कुमार यादव ने डाक विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस और तदनुसार आरम्भ हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ करते हुए किया। इससे पूर्व उन्होंने माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर और दीप प्रज्वलित कर लहदी पखवाड़ा का शुभारम्भ किया। सहायक लेखाधिकारी संतोषी राय, डाक निरीक्षक श्रीकान्त पाल, रमेश यादव, श्रीप्रकाश गुप्ता, राकेश कुमार, विवेक कुमार, मनीष कुमार, रामचंद्र, सहित तमाम तमाम विभागीय अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शंभु प्रसाद गुप्ता ने किया।

ब्रजेश शर्मा
सहायक निदेशक
कार्यालय - पोस्टमास्टर जनरल
वाराणसी परिक्षेत्र, वाराणसी -221002

सुश्री राधिका (प्रियंका) – नई पीढ़ी की बेटियों के लिए एक नजीर

-हेमन्त चौकियाल

यों तो पूरे विश्व में ही भारत को रत्नगर्भा कहा जाता है, परन्तु भारत के प्रदेशों में से उत्तराखंड को देवभूमि, ऋषि-मुनियों की तपोभूमि कहा जाता है। यहाँ के चमोली जनपद के वेदनी बुग्याल क्षेत्र में वेदों की रचना होना प्रमाणित हो चुका है, जिससे यह भी स्पष्ट होता है कि यही वह क्षेत्र है जिसने विश्व को भाषा, लिपि सभ्यता, संस्कृति के साथ जीवन जीने की भी कला प्रदान की। वैदिक काल से ही यह भूमि अपनी दैविक, आध्यात्मिक और धार्मिक आलौकिक कार्यों के लिए विख्यात रही है। जनकल्याण के लिए यह भूमि मानव के साथ-साथ देवताओं के लिए भी प्रिय रही है। हमारे इतिहास में वर्णित नारद, अगस्त्य, मनु, स्मृति, सीता, कर्ण, अनिरुद्ध, पाण्डवों, शकुन्तला और दुष्यंत के पुत्र भरत सहित अनेकानेक युग पुरुषों ने यहाँ की माटी में पल, बढ़कर जनकल्याण के लिए अपना जीवन बिताया। वर्तमान में भी, चाहे वह सेना में सैनिक के रूप में हो या राजनीति में सलाह देने वाले सलाहकारों के रूप या उच्च पदों पर पदस्थ लोकसेवकों के रूप में, यहाँ के निवासियों की अपनी कार्यशैली और कार्यप्रणाली और व्यवहार के कारण एक अलग ही छवि है। ऐसे ही आध्यात्मिकता के क्षेत्र में भी नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व, वर्तमान में एक युवती कर रहीं हैं, जिन्होंने न केवल अपने ज्ञान, चरित्र और व्यवहार से समाज में एक अलग ही पहचान बनाई है, वरन वह गौरवशाली भारत के खोये हुए अतीत को भी सामाजिक सहभागिता से वापस लाने की मुहिम में शामिल हैं।

रुद्रप्रयाग जनपद की जले ग्राम सभा की उतुंगवादियों में बाँज, बुराँश, काफल आदि घनी वनस्पतियों के बीच में श्री नागेश्वर शिवालय अवस्थित है। इस पावन धाम में माँ नन्दा राज राजेश्वरी व भगवान भोलेनाथ जी का स्वयंभू लिंग है। मन्दिर के ठीक नीचे की पहाड़ी से नागेश्वरी गंगा का उद्गम स्थल है। इस पौराणिक गंगा का वर्णन श्री केदारखण्ड में भी मिलता है।

जंगल में अवस्थित होने के कारण यहाँ पर वनदेवी-देवता व भूमिया देवता को इष्टदेव मानकर पूजन अर्चन किया जाता है। इस पवित्र तीर्थ के पहले महन्त 'स्वामी नन्द ब्रह्मचारी' थे। 11 फरवरी 1998 की रात्रि को स्वामी नन्द ब्रह्मचारी ने महाप्रयाण लेते वक्त श्री हरिशंकर जी को वचनवद्ध किया था कि अब आप इस कुटिया को सम्भालेंगे व मन्दिर की पूजा अर्चना के लिए कृत संकल्प होंगे। उस महान सन्त की समाधि इसी स्थान पर बनी हुई है। तदुपरान्त हरिशंकर गोस्वामी ने 2000 में रुद्रप्रयाग के कोटेश्वर महादेव के महन्त 108 शिवानन्द गिरी जी महाराज से 31 वर्ष की आयु में दीक्षा ग्रहण की और महन्त के प्रथम शिष्य बन गये। जिसके बाद उन्होंने हरिहरानन्द गिरी महाराज नाम धारण किया। इसके साथ ही उन्होंने अपनी गृहस्थी और संसारिक नाता रिश्तेदारी से भी किनारा कर लिया। आज वे इस पवित्र तीर्थ पर भगवान नागेश्वर व माँ नन्दा देवी के पुजारी के रूप में, सन्त को दिया वचन निभाते हुए आश्रम की व्यवस्था को देख रहे हैं। इन्हीं की सुपुत्री हम सबकी गौरव, नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत श्री राधिका

(प्रियंका) केदारखण्डी जी हैं।

महन्त परमादरणीय शिव स्वरूप श्री हरिशंकर गोस्वामी जी की सुपुत्री ठेठ गढ़वाली संस्कृति में पली-बढ़ी सुश्री राधिका (केदारखण्डी) जी का जन्म 17 जनवरी 1994 को रुद्रप्रयाग जिले के ग्राम-जल -सुरसाल के एक छोटे से गाँव 'सदेला' की पवित्र गौशाला में हुआ।

राधिका जी की प्रारम्भिक शिक्षा 1998 में सरस्वती शिशु मन्दिर कण्डारा से हुई। इसके बाद 2012 में राधिका जी ने 12 वीं की शिक्षा राजकीय इण्टर कॉलेज कण्डारा से उत्तीर्ण कर वर्ष 2017 में रा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय अगस्त्यमुनि से संस्कृत में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ राधिका जी, पिताजी की प्ररेणा से श्रीमद्भागवत, श्रीरामचरितमानस आदि धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन भी करती रहीं। आप अपनी माता जी श्रीमती रामेश्वरी देवी के साथ घरेलू कार्यों में भी हाथ बँटाती रहीं, जिस कारण आप घरेलू कार्यों में भी दक्ष हैं।

राधिका जी अपनी जिजीविषा, मेहनत एवं लगन एवं ईश्वरीय प्रेरणा व विधि के विधान के बल पर आज मातृशक्ति के लिए एक नजीर बन गयी हैं। हों भी क्यों नहीं, आपके पिताजी श्री गोस्वामी जी ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। श्री गोस्वामीजी रंग मंच से जुड़े हुए व्यक्ति रहे हैं। गीत, संगीत एवं अभिनय में आपकी बचपन से ही रुचि थी। राधिका जी के पिता ने मुम्बई के गोरेगांव से लता मंगेशकर के भाई हृदयनाथ मंगेशकर से संगीत की शिक्षा प्राप्त की। बचपन से ही परिवार में संगीत और भजन के माहौल के कारण राधिका जी और उनके दोनों भाइयों का रुझान संगीत की तरफ स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगा। राधिका जी और उनके भाइयों ने अपने पिता से ही संगीत की शिक्षा ग्रहण की। श्री हरिशंकर गोस्वामी के तीनों बच्चे अपने गायन वादन के माध्यम से जनता के दिलों में राज कर रहे हैं।

राधिका जी को पहली शिवपुराण कथा में संगीत और भजन का कार्यक्रम ब्रदीनाथ में जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी माधवाश्रम महाराज के सानिध्य में मिला तब राधिका जी की उम्र महज 7 साल थी।

श्री नागेश्वर भजन संध्या एवं कोटेश्वर महादेव साउण्ड के बैनर तले आप उत्तराखण्ड सहित अन्य प्रदेशों में भी भजन व कीर्तनों के माध्यम से भक्तों के दिलों से सीधे जुड़ गयी हैं।

राधिका जी ने अपना पहला प्रवचन 16 वर्ष की उम्र में एक दिवसीय गौमाता की महिमा पर ग्राम सुरसाल में दिया। ग्राम सुरसाल से ही राधिका जी को गद्दी प्राप्त हुई थी। राधिका जी के मुखारविन्द से गौमाता की अद्वितीय दिव्य महिमा को सुनते-2 अनायास ही अभिभूत होकर राधिका जी के पिता के श्रीमुख से आपको 'पूज्या राधिका जी केदारखण्डी' की संज्ञा उच्चारित हो गयी। यह एक सन्त की वाणी से निकला हुआ सम्मान सूचक शब्द था। जिस कारण कालान्तर में राधिका जी राधिका केदारखण्डी के नाम से प्रसिद्ध हो गयीं।

राधिका जी के जीवन में सबसे बड़ा मोड़ तब आया जब वर्ष 2013 में राधिका जी को रुद्रप्रयाग में गोपाल गोलोक धाम में पूज्य गोपालमणि महाराज जी के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। महाराज जी का आशीर्वाद मिला, गौमाता के प्रति श्रद्धा और प्रभु की कथाओं एवं गौकथा के प्रति रुझान को देखकर महाराज जी ने उचित मार्गदर्शन किया।

आगे चलकर राधिका जी ने अनेक सन्तों के सानिध्य में बड़े-बड़े मंचों में अनेक गौ कथा, तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस और वाल्मीकि रामायण का पाठ किया, जिसका कई चैनलों पर प्रसारण भी किया गया। अभी तक राधिका जी कई गौ कथाएं और श्रीरामकथा कर चुकी हैं। राधिका जी की कथायें, प्रवचन एवं भजन का

प्रसारण सामुदायिक रेडियो 90.8 एफ.एम. 'मंदाकिनी की आवाज', आध्यात्म टीवी चैनल, बाबा प्रोडेक्शन यूट्यूब चैनल एवं स्वयं का धेनू वर्षा यूट्यूब चैनल पर भी किया जाता है। राधिका जी की बुद्धि, पाण्डित्य व सामाजिक सहभागिता से प्रभावित होकर 'मंदाकिनी की आवाज कल्याण सेवा समिति' के द्वारा एवं 'नन्दा देवी कौथिंग' आदि के द्वारा सम्मानित किया गया है।

श्री हरिशंकर गोस्वामी जी के तीनों संतानों में सबसे छोटी राधिका जी अपने दिव्य ज्ञान से समाज को एक नई दिशा व दशा देने का प्रयास कर रही हैं। अपनी बुद्धि और पाण्डित्य के बल से आपको वृन्दावन जैसे पावन धाम में व्यासपीठ से अपने मुखारविन्द से श्री राम कथा की दिव्य प्रस्तुति देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

राधिका ने अपनी छोटी सी उम्र में ही दिव्य गौ कथा, श्रीमदभागवत कथा व दिव्य श्री राम कथा की व्यासपीठ से अपनी मधुर वाणी से प्रस्तुति देकर यह साबित कर दिया है कि पहाड़ की बेटियाँ भी ज्ञान व कौशल में कम नहीं हैं। आपकी वाणी में साक्षात सरस्वती का वास है। जब आप व्यासपीठ पर विराजमान होती हैं तो लगता है मानो साक्षात दिव्य स्वरूपा माँ पराम्बा जगदम्बिका भगवती बैठी हों।

राधिका जी के बारे में अपने संस्मरण बताते हुए पैलिंग गाँव के निवासी और इस लेख की तमाम जानकारियाँ प्रदान करने वाले व्यक्तित्व श्री माधव सिंह नेगी ने बताया कि हमने बचपन से ही एक लोकोक्ति सुनी थी कि 'पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं' (अर्थात-किसी व्यक्ति के भविष्य का अनुमान उसके वर्तमान लक्षणों से लगाया जा सकता है।) लेकिन इस लोकोक्ति का वास्तविक अर्थ राधिका जी को देखकर समझा। श्री माधव सिंह नेगी आगे बताते हैं कि राधिका महज जब 5-6 वर्ष की थी, तो हमारे गाँव में श्री रामलीला मंचन के दौरान बालिका राधिका (तब उनका नाम प्रियंका था) अपने पिताजी व भाइयों के साथ भजन व कीर्तनों की दिव्य प्रस्तुतियाँ देती थीं। तभी आपके भविष्य का अंदाज लग गया था कि भविष्य में ये बिटिया निश्चित ही एक दिन बहुत बड़ा दायित्व निभाने वाली है। अपने ज्ञान, कौशल, संस्कारों के माध्यम से राधिका, भारतीय संस्कृति व परम्पराओं का संरक्षण व संवर्द्धन करते हुए समाज में आध्यात्मिक चेतना का संचार कर रही हैं। अपने प्रवचनों में राधिका जी अपने सामाजिक और सांस्कृतिक दायित्वों का भी बखूबी निर्वहन कर रही हैं।

स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने व प्राकृतिक वस्तुओं का सदुपयोग कर, कम से कम दोहन करने के लिए वे प्रोत्साहित करती हैं।

राधिका जी कथाओं के साथ-साथ गौमाता के गोबर और हिमालय की अलग-अलग जड़ी-बूटियों को मिलाकर शुद्ध प्राकृतिक धूप भी तैयार करती हैं। जिसका नाम धेनु वर्षा रखा गया है। अभी राधिका जी गोबर से अन्य वस्तुएँ बनाने के प्रयास में लगी हुई हैं। कुछ शोध करके उन्होंने गोबर से दिया, गोबर गणेश, गोबर से राखियाँ, गोबर से समिधा/लकड़ी, गोबर से माला, गोबर से मूर्तियाँ आदि तैयार करने का भी सफल प्रयास किया है। धेनु वर्षा के नाम पर ही राधिका जी का अब स्वयं का यूट्यूब चैनल भी है। जिसके माध्यम से लाइव कथाओं का प्रसारण किया जाता है।

राधिका जी के सलाहकार श्री नवीन जोशी जी हैं। राधिका जी का मुख्य उद्देश्य है कि देवभूमि उत्तराखण्ड की महिमा, धार्मिक स्थलों व संस्कृति के विषय में पूरा विश्व जाने और यहाँ की सभ्यता, संस्कृति और परम्पराओं में समाहित वैज्ञानिकता से वाकिफ हो।

पारस

-आशा शैली

.....पारस के दिमाग़ में तो मित्रों के व्यंग्य घूम रहे थे। उसे यही डर खाये जा रहा था कि कल जब वह उन्हें मिठाई नहीं खिला सकेगा तो वे सब उसे ताना तो मारेंगे ही। यह बात एकदम पक्की है पर मिठाई आए कैसे? बुआ से तो पैसे माँगने का कोई मतलब ही नहीं, वह तो थानेदार से बड़ी थानेदारनी है। बहुत पूछ-जाँच करेगी और डांट पड़ेगी सो अलग, पर अब क्या करना चाहिए? यही विचार मंथन उसके बाल मन में चल रहा था। एकाएक कुछ सोचकर उसकी आँखें चमकने लगीं।

पिछले दिन ही सत्या ने आँगन में नया तन्दूर लगाया था, उसने देखा था कि तन्दूर की पीठ पर बुआ टूटे हुए घड़े की छोटी-छोटी ठीकरियाँ गोबर से चिपका रही थी। उससे बची कुछ ठीकरियाँ कोने में पड़ी थीं। न जाने कैसे उसके बाल मन ने उन मिट्टी के टुकड़ों को पैसों में बदल दिया और वह उन्हीं को देकर हलवाई से मिठाई लाने लगा। हलवाई उसकी बालबुद्धि पर पहले तो बहुत हँसा, फिर उसे भी लगा कि यह बच्चा तो बहुत गलत दिशा में जा रहा है। कुछ करना चाहिए। वैसे भी कब तक वह इसे बिना पैसे के मिठाई देता रहेगा।

.....

देसराज पन्द्रह दिन के दौरे के बाद वापस रावलपिण्डी लौटा था, रात के खाने के बाद जब उसने रोज की तरह पारस को अपने साथ चलने के लिए आवाज़ लगाई तो पारस ने डर के मारे आँखें बंद करलीं। उसे हलवाई से भी डर लग रहा था और फूफा जी से भी। हालांकि उसने देसराज को कभी गुस्से में देखा ही नहीं था, फिर भी उसे यह तो पता था कि उसने कुछ तो गलत किया ही है। बस इसी डर के कारण वह बहुत पहले ही अपने बिस्तर पर जाकर लेट गया था। देसराज को कमरे से सत्या का जवाब मिला, ''सो गया है।''

देसराज चाहते थे कि पारस को साथ चलने के लिए उठा लें वह उनका पक्का साथी था, पर बहुत दिनों के बाद घर आए थे। पत्नी का मूड भी खराब नहीं करना चाहते थे, इसलिए चुपचाप अकेले ही बाहर निकल गए। सब से दुआ-सलाम करते हुए मंद-मंद मुस्कुराते थानेदार साहब जब हलवाई की दुकान के सामने से गुज़रने लगे तो हलवाई ने मिन्नत-खुशामद करके आज उन्हें दुकान पर बैठा ही लिया।

बड़े-से चूड़ीदार गिलास में दूध और कड़छी भर मलाई डालकर ले आया। ''अज तो आपको पीना ही पड़ेगा। कभी भी नहीं बैठते आप। ऐसा क्या है भाई, हम भी तो आपके ही हैं .....ही....ही....ही...।''

''नहीं....नहीं वीर जी! ऐसी कोई गल्ल नईं। बस नौकरी से फुर्सत नहीं। क्या करें। आप सुनाओ। कारोबार ठीक चल रेयै न?''

''हाँ साहब! सब कुझ ठीक है। तुसी बैठो जरा मैं इक मिन्ट विच आया। तब तक आप दूध पी लो।'' हलवाई ने देखा साहब का मूड अच्छा है, इस समय बात करना ठीक रहेगा। वह उठकर दुकान के भीतर गया और एक कपड़े में बंधी घड़े की ठीकरियाँ लाकर उसने थानेदार साहब के सामने खोलकर रख दीं।

''यह क्या है?''

''आपके पैसे।''

''मेरे पैसे?''

''हाँ जी। ये आपके आने (चार पैसे) हैं जो देकर आपका काका रोज बर्फी ले जाता है।'' हलवाई ने देसराज को पूरी कहानी कह सुनाई, पर वह अन्दर से डर भी रहा था कि कहीं थानेदार चिढ़ गया तो लेने के देने पड़ सकते हैं। थानेदार साहब एक पल को सकते में आ गए, परन्तु फिर अगले ही पल वे हो....हो कर के हँसने लगे। हलवाई को लगा, पासा गलत पड़ गया है। यह आदमी बच्चे को नहीं समझाने वाला। पर तभी थानेदार देसराज जो ठीकरियाँ देखकर उठ खड़ा हुआ था, फिर बेंच पर बैठ गया, ''ये आने ही हैं न?''

''हाँ..हाँ!'' हलवाई ने असमंजस में सिर हिलाया।

''ठीक है, गिन लेते हैं।'' और ठीकरियाँ गिनकर देसराज ने हलवाई को पूरे पैसे निकालकर देते हुए कहा, ''वीर जी, इन बच्चों के दिमाग़ की भी दाद देनी पड़ती है। कैसे आई यह बात उसके दिमाग़ में कि इस तरह भी मिठाई का मोल चुकाया जा सकता है। पाँच साल का होने वाला है यह लड़का, पर अभी तक अक्कल नहीं आई। अच्छा किया आपने बता दिया। वरना बच्चा बिगड़ने में देर नहीं लगती।''

हलवाई ने सुख की साँस ली कि मामला बिगड़ा नहीं। वरना इन पुलसियों का क्या भरोसा। है भी थानेदार, क्या पता क्या करता। पर नहीं, शरीफ आदमी है। लड़के की शैतानी के पैसे पूरे-पूरे चुका गया और उसे सुधारने की बात भी कर रहा है।

सुबह पारस की क्लास लगती, इससे पहले ही थानेदार साहब को बुलाने अर्दली आ पहुँचा। शहर के एक इलाके में दंगा भड़क गया था। जल्दी-जल्दी वर्दी पहनकर देसराज घर से निकल गया। पारस तब तक डर के मारे सामने ही नहीं पड़ा था। जान बच गई, वरना दो-चार तो पड़ ही जाते। थानेदार साहब ने सोचा, शाम को आकर खबर लेता हूँ। लड़का बिगड़ने लगा है। कल कोई बड़ी वारदात कर दी तो मुँह काला ही समझो। पर शाम को भी इसकी नौबत नहीं आई। थानेदार साहब आधी रात गए थके-माँदे घर लौटे और सो गए।

.....

इधर जब कुछ दिन यूँ ही गुज़र गए तो सोमनाथ को अकेलापन फाड़ खाने लगा। वह जितना काम में उलझने की कोशिश करता उतना ही उसे जानकी याद आती, रही राजवंती! वह तो वैसे भी एक समझौता ही थी। अगर उसका व्यवहार सही रहा होता तो धीरे-धीरे शायद वह जानकी का स्थान ले ही लेती।

सच पूछा जाए तो इस घर में असली रूह जानकी ने ही फूंकी थी। माँ तो बहुत पहले ही उन सबको छोड़कर चली गई थी। पिता जी, भाभी और वीर जी के बाद अगर घर, घर बना था तो जानकी के कारण ही था। हाँ! राजवंती चाहे बस गुजारा ही थी, पर फिर भी घर तो उसके रहते भी खुला ही रहता था। भले ही उसने पारस को दुत्कारा था फिर भी..... ? उसके भाग्य में ही घर-गरस्ती का सुख नहीं तो क्यों तड़पे? नहीं....अब शादी की कोई बात नहीं, कोई जरूरत ही नहीं। बागों की देखभाल भी तो जरूरी थी। क्या करे और क्या न करे वाली हालत थी।

.....

आजकल देसराज की ड्यूटी एक बार फिर से पंजा साहब में लगी हुई थी। अब नौकरी में यह सब तो होना ही है, कभी यहाँ तो कभी वहाँ। उसे सरकारी क्वार्टर भी मिला हुआ था। अभी सत्या और पारस के साथ देसराज को पंजा साहब आए पन्द्रह दिन ही हुए थे कि एक दिन सोमनाथ को दरवाजे के पास खड़ा देखकर वे लोग हैरान हो गए। देसराज को सोमनाथ ने बताया कि वह गुरुद्वारे में ही रुकेगा। देसराज जानता था कि वे लोग छोटी बहन के घर का पानी भी नहीं पीते थे इसलिए चुप ही रहे।

सोमनाथ ने ही कहा, ''पारस को देखे बिना बहुत

दिन हो गए थे, इसलिए चला आया।'' एक पारस था और उसके तलबगार दो। न तो सत्या ही उसे छोड़ना चाहती थी और न ही सोमनाथ। पर यदि सच पूछा जाए तो सोमनाथ को अकेलापन खाए जा रहा था।

चार दिन हो गए थे, सोमनाथ पारस को अपने पास गुरुद्वारे ले गया पर वापस लौटकर वह फिर से अकेला ही तो था। आखिरकार अकेलेपन से घबराकर और पारस की पढ़ाई का बहाना बनाकर एक दिन वह पारस को सत्या के घर से ले आया।

उसका यह कहना काम कर गया कि देसराज की तो रोज ही बदली (स्थानान्तरण) होगी, इस तरह तो पारस की पढ़ाई खराब ही होगी। दरअसल अब तो ले-देकर जानकी की याद और अपने जीने का एक मात्र सहारा देखकर वह पारस को अपनी आँखों से दूर नहीं होने देता। विवश होकर सत्या को ही मन मारना पड़ा। पर यह भी सच है कि अब तो बस पारस ही उन दोनों बहन-भाईयों के जीवन की अंधेरी रातों में चमकने वाला जुगनू था।

पारस कहाँ तो माँ के प्यार को बुआ के पास खोजता फिरता था, अब उसको माँ और पिता का प्यार-दुलार जो अब तक नहीं मिला था, भरपूर मिलने लगा। इसके साथ ही उसे वह सब भी मिलने लगा जो उसे कभी नहीं मिला था। उधर सत्या की भी जान तो पारस में ही अटकी हुई थी। ज्यादा दूरी भी नहीं थी, जब मन करता चली आती। आज भी सत्या भाई के घर में थी,

''वीर जी! मैंने सोचा कि क्यों न आप को दो दिन रोटी पका के खिला दूँ। परसे के स्कूल की भी तैयारी करनी है।''

''वेख लै! कदी देसराज होरां को एतराज ना होण लगे।''

''नहीं, पुछ के ही आई हूँ।''

अब कुछ कहने को नहीं था सोमनाथ के पास। पारस को तो खुश होना ही था वह जो कहता सत्या वह तुरन्त पूरा करती उसे और क्या चाहिए था। सोमनाथ भी बेफिक्र होकर अपना काम देख रहा था।

उस दिन दोपहर को पारस एक फोटो कहीं से निकाल लाया,

''बुआ! यह कौन हैं, देखो।''

''दिखा, दे इधर।'' सत्या ने पारस के हाथ से शीशे में मढ़ा, पीलापन लिए वह पुराना-सा फोटो ले लिया, ''ये कहाँ से मिली तुझे?''

''बाऊजी की अलमारी में थी। पर बुआ, ये कौण है बाऊजी के साथ?'' सत्या ने पारस को पकड़कर गोद में बैठा लिया और एक हाथ से दुपट्टे के कोने से आँसू पोंछ लिए, ''ये तेरी माँ है परसू। पता नहीं कब काका वीर जी ने यह फोटो खिंचवाया होगा। शायद बड़े वीर जी से शर्माकर उन्होंने इसे अलमारी में छुपा दिया होगा। चल इसको कानस पर रख देते हैं।''

''तो बुआ, यह इनकी गोद में कौन है?'' पारस ने सत्या का दुपट्टा बराबर पकड़ रखा था। सत्या उठकर बाहर गई और एक कपड़ा गीला करके उस पर साबुन लगाकर उस अलमारी में कहीं नीचे दबे मैल जमे फ़ोटो को साफ़ करने लगी। फ़ोटो साफ़ होने लगा तो जानकी का मुस्कुराता चेहरा सामने आने लगा। जानकी एक कुर्सी पर बैठी हुई थी और सोमनाथ कुर्सी पर हाथ रखे उसके पीछे खड़ा था। जानकी की गोद में एक गोल-मटोल बच्चा खिलखिला रहा था, जो मुश्किल से एक साल का होगा। फ़ोटो साफ़ करके सत्या ने अपने दुपट्टे से ही पोंछ लिया और फिर उसी दुपट्टे से अपनी आँखों से टपकने को बेचैन आँसुओं को भी पोंछ लिया। उसे रोते देख पारस सहम गया। उसे लगा उसने कुछ गलत कर दिया है जो बुआ रोने लगी है। उसने लोगों को रोते देखा था उस बात को ज्यादा दिन तो नहीं हुए थे। वह आगे आकर सत्या के आँसू पोंछने लगा,

''रो मत बुआ। मैं नहीं पूछूँगा कौन है।'' बड़ी मासूमियत से उसने अपने गाल सत्या के गाल से सटा

दिया तो सत्या की भीगी आँखें मुस्कुरा उठीं।

''नहीं मेरे बच्चे। तेरा कसूर नईं। आ! अन्दर चलिए।'' सत्या उठ खड़ी हुई और कमरे में बनी कार्निस पर सामान इधर-उधर कर के बीचों-बीच जगह बनाकर फ़ोटो रख दिया। अब वह कार्निस पर रखा फ़ोटो चमक रहा था। वह फिर खाट पर आ बैठी और पारस को खींचकर अपनी गोद में बैठा लिया।

''ये फ़ोटो तेरी झाई, जानकी भाभी की है। तेरी अपनी माँ।''

''तो ...फिर....वो.....?'' इसके आगे पारस कुछ नहीं बोल सका क्योंकि उसे तो यही समझाया गया था कि वह राजवन्ती को झाई (माँ) जी कहे।

''और वो गोद में तू है और ये फोटो पंजे साब (साहब) की है।''सत्या ने उसकी बात को नज़रअंदाज़ कर दिया। वह समझ रही थी कि वह राजवंती के बारे में पूछ रहा है,''कभी गए होंगे दोनों वहाँ, तब खिंचवाई होगी पर अब इसे बाहर ही रहने देना है, अल्मारी में नहीं रखना।''

माँ की तो पारस को याद ही नहीं थी। अपनी याद में उसने राजवंती को ही माँ समझा था, पर हाँ यह परिचय उसे अच्छा लगा जो सत्या बुआ ने दिया था। अपनी माँ का चेहरा चाहे फ़ोटो में ही सही, पारस ने आज पहली बार देखा था। वह बार-बार उस फोटो को देखने लगा।

शाम को जब सोमनाथ ने वह फोटो कार्निस पर सजा हुआ देखा तो उसके पैर अनायास ही ठिठक गए। पर उसने किसी से कुछ नहीं कहा।

राजवन्ती के मरने के बाद अचानक ही पारस भी बहुत समझदार हो गया था। अब वह सारी बातों को समझने लगा था। इस बार सत्या की सारी कोशिशों के बाद भी सोमनाथ ने उसे सत्या के साथ नहीं भेजा और उसने भी पिता के पास ही रहने के लिए हामी भरी तो सत्या खाली हाथ फिर लौट गई, इसलिए वह भी बजाय इधर-उधर भटकने के पिता जी के साथ रहने और पढ़ाई में पूरा ध्यान लगाने लगा। सोमनाथ पूरी लगन और मेहनत से उसकी देखभाल करता फिर भी उसे लगता कि कहीं कुछ कमी न रह जाए।

जब कभी उसे अकेले बैठने का समय मिलता, उसे जानकी याद आती और याद आती उसकी बातें, पारस के जन्म पर वह कितनी उत्साहित थी। वह चाहती थी कि पारस को पढ़ाया जाए पर हज़रो में तो पाँचवीं तक ही स्कूल था।

ऐसे में ही एक दिन वे दोनों पंजे साहब गए तो गुरुद्वारे के साथ ही लगे स्कूल में बच्चों को वर्दी में देखकर जानकी बहुत उत्साहित होकर बोली थी,

''शाह जी! (वह सोमनाथ को शाह जी ही कहा करती थी।) अपणा पारस वी ऐसा ही लगेगा स्कूल जाता हुआ।''

''हाँ! पर चल आज एक फोटो खिचा लेते हैं।'' और वे एक फोटोग्राफर की दुकान में जा बैठे थे। यह फोटो उसी समय का था जो सत्या ने साफ़ करके कार्निस पर रख दिया था। पर फिर डेढ़ साल बाद ही बेटी के जन्म से ही वह बीमार रहने लगी थी और सारे परिवार का ध्यान उसकी बीमारी पर लग गया।

.....

ज्ञानवर्धक और जीवन की व्यवहारिकता के पड़ावों से गुजरती लघुकथाएँ

–अंजना छलोत्रे 'सवि'

खिली धूप (लघु कथा)
लेखिका...डॉ. रुखसाना सिद्दीकी
प्रकाशन : अयन प्रकाशन
महरौली नई दिल्ली
मूल्य -180/-

इस किताब का मुख्य पृष्ठ बहुत ही आकर्षक है पेड़ों की झुरमुट से झांकती हुई सूर्य की किरणें अलौकिक आभा बिखेरती है।

111 लघुकथाओं का यह संग्रह मन को मोह लेता है और आप एक बैठक में ही पाँच से छः लघुकथाएँ पढ़ जाते हैं सभी लघुकथाएँ बहुत ही अच्छी और ज्ञानवर्धक है जीवन की व्यवहारिकता में किस तरह के पड़ावों को झेलना पड़ता है उनसे रूबरू कराता यह लघुकथा संग्रह बहुत ही रोचक बना है।

लघुकथा नासूर, एडजस्टमेंट, सौगात, मदद, पॉसिबिल, रक्षक, धरातल, सार्थकता अपने आप में अनोखी हैं रिश्तों के ऐसे ताने-बाने बुने हैं कि मन पसीज जाता है।

वही अमूल्य... कहानी अपने धन संपदा का बंटवारा भला क्यों एक सवाल पैदा करता है। यह कैसा दान... कहानी अपनी-अपनी समझ नजरिया अपना-अपना दर्शाती है। भेद... कहानी समय पर समझ आ जाए तो भी ठीक है की और इंगित करती है। सदुपयोग... कहानी अपना काम करना पुरुष का यह सोचना तो गृहणी के लिए स्वर्ग के समान है। मातृत्व सुख... कहानी में यह सच है कि जो नहीं है उसमें क्या दोष ढूंढना जो है उसी में सकारात्मक सोच रखता ही बेहतर है ।

जीवन में हम अंग्रेजी शब्द के इतने आदी हो गये हैं की हिंदी भावार्थ ही नहीं सूझता और इंग्लिश शब्द हिंदी में लिखकर काम चला लेते हैं लेकिन हिंदी पढ़ते वक्त अंग्रेजी शब्द पढ़ते-पढ़ते झटका देता है जो पढ़ने की लय तोड़ देता है।

सोलह आने सच... यह तो हर गाँव का किस्सा था जिसे मैंने खुद तोड़ा है बिल्कुल इसी तरह जिस तरह इस कहानी में तोड़ा गया है। प्रार्थना... मानव की यही मिसाल तो धरती पर विराजमान है। हम तभी तो छूटेंगे जब कोई जानकारी दे, यह संदेश देती है अंधविश्वास की परत... कहानी। हुनर की कदर करने वाले बहुत है जहाँ रूढ़ियाँ दम तोड़ देती हैं शर्त... कहानी यही दर्शाती है। यह वह संतानें हैं जो किसी राक्षस वंश की होगी गलती से मानव रूप धारण कर लिया इस कहानी गुणा भाग... में यही बताया है।

युवा होती लड़कियों में यह आत्मविश्वास आ जाए तो क्या कहना समाज का पूरा कूड़ाकरकट साफ हो जाए निर्णय... कहानी से। मोह के धागे कभी नहीं टूटते हमेशा जुड़ने को आतुर रहते हैं... विजातीय। रिश्तों की चिंदी-चिंदी होती परंपरा कहाँ जायेगा यह सब करके मानव... खुली कब्र में। देखा-देखी में घर का प्यार भरा माहौल कैसे बिगड़ता है यह निरुत्तर... में है। सच्ची भावना से किया गया कार्य मीठा फल ही देती है यहाँ कर्म की प्रधानता

आवश्यक है करने वाला कौन किस भावना से और ग्रहण करने वाले की क्षमता का आंकलन ईश्वर स्वयं कर देता है ...तर्पण। किसी की समझ को परिवर्तित होते देखकर एक माँ ही होती है जो संतोष की पराकाष्ठा पाली रहती है ...ममत्व।

बच्चों के जीवन में हमारा होना कितना मायने रखता है जहाँ दिल में लबालब प्यार का प्याला छलके तो माँ अपनी खुशी तो छोड़िए मौत को भी फिर कभी आना कह सकती है... देहरी। घुर्तता की हद... न्याय। जब जागो तभी सुबह... प्रायश्चित। स्वार्थ की आँधी भविष्य की वेदी पर... दक्षिण। प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता जो नहीं...नैतिक शिक्षा। दृढ़ता चट्टान को तोड़ सकती है...नियत। किसी भी बात की शुरुआत सुखद होती है...पहल। आदतों के गुलम हम नहीं...अहसास। उम्र और समझ में थोड़ा सा ही फर्क है...बचपना। समझ की गहरा नापना असम्भव...परिवर्तन । जगह-जगह का फर्क. ..बिझूका।

मन में दृढ़ता हो तो मंजिल दूर नहीं...गुदड़ी के लाल। सटीक निर्णय... समझौता। इंसानों की नस्ल से बेहतर जानवर...वफादार। भोले भाले सटीक सवाल...गारंटी। ममत्व सुख की अनुभूति...फुहार। न्याय का जबरदस्त तरीका...प्रदूषण। प्यार का संगम जहाँ बहे वहाँ उम्र का क्या बंधन...बचपन की सखी। फर्क आपस का...स्पष्टवादिता। किसे जख्म देते इंसान...असलियत। अलग-अलग रस्में अलग कानून...अपना देश। क्षमता का दिखावा... अधिकार। समय के साथ समझौता...सामंजस्य। सब चुकता हो गया... दुआ। दुआ ही दुआ है जन्मे शिशु को...उपवास।

फूलों के रंग...कुछ उलझा सा मन। नई०ए नवेली...अपनी-अपनी समझदारी। सुखद अंत... हिम्मत की दरकार हर वक्त हर मोड़ पर। दृष्टिकोण. .. सही वह मजबूत नींव की चाह। कैछी होती है बाढ़... नीति का भोलापन। अस्मत... नियत का अंदाजा। वीक स्टूडेंट... संगत की छाँव। अनुगामिनी. .. जैसे को तैसा ज़वाब। नया बरस... अपना अपना नया वर्ष। चेंज... बदलाव प्रकृति का नियम है। भ्रमजाल... कड़वी सच्चाई। बारी... माँ को बोझ समझती नारी।

मिड डे मील...सोच की कसौटी, परिवर्तन की बयान दिखती है। आश्रय...बेटियों की अहमियत बताती यह कहानी। बात पते की... ज्वलन्त समस्या की बेहतरीन प्रस्तुति की है। डिमांड...समझ की पराकाष्ठा मानवता का तकाजा देती लघुकथा, इंसानियत का पलड़ा भारी ही रहता है बेहतरीन। प्रतिबंध... करार और जिम्मेदार कौन का सवाल टांक दिया, अब तो इंसान चेत जाये कब रुकेगा यह सिलसिला।

टास...माँ का निर्णय कब किन परिस्थितियों में किसके पाले में जायेगा सोचा भी नहीं जा सकता, परिणाम के समय भी माँ ही उचित निर्णय कर पाने में आज भी सक्षम है। स्वच्छ वातावरण...जोरदार व्यंग्य, सच सत्ता की सोच और वहाँ रहने वालों की अपनी जिम्मेदारी उठाने के बीच बनते ऐसे संयोग में यमराज को ही सोचना पड़ेगा। अच्छे दिन... समझ से परे आम आदमी की ऐसी समझ जो समय के साथ करवट लेती है और वह मन मसोस कर रह जाता है शायद परिवर्तन का आभास उसे इसी तरह होता है।

लेखिका डॉ. रुखसाना सिद्दीकी के इस लघुकथा संग्रह खिली धूप में विभिन्न पहलू उठाकर एक जगह एकत्रित किया है जो एक सुखद अनुभूति देता है और आपको सोचने को मजबूर भी करता है अच्छे प्रयासों से की गई अच्छी पहल को साहित्य जगत में भरपूर प्यार व सम्मान मिलेगा इसी आशा के साथ में उनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

वृन्दा
अंजना छलोत्रे 'सवि'